जय-जस गाथा

भीष्म प्रतिज्ञाधारी एकभवावतारी आचार्यश्री जयमलजी म. सा. का सचित्र जीवन-चरित्र

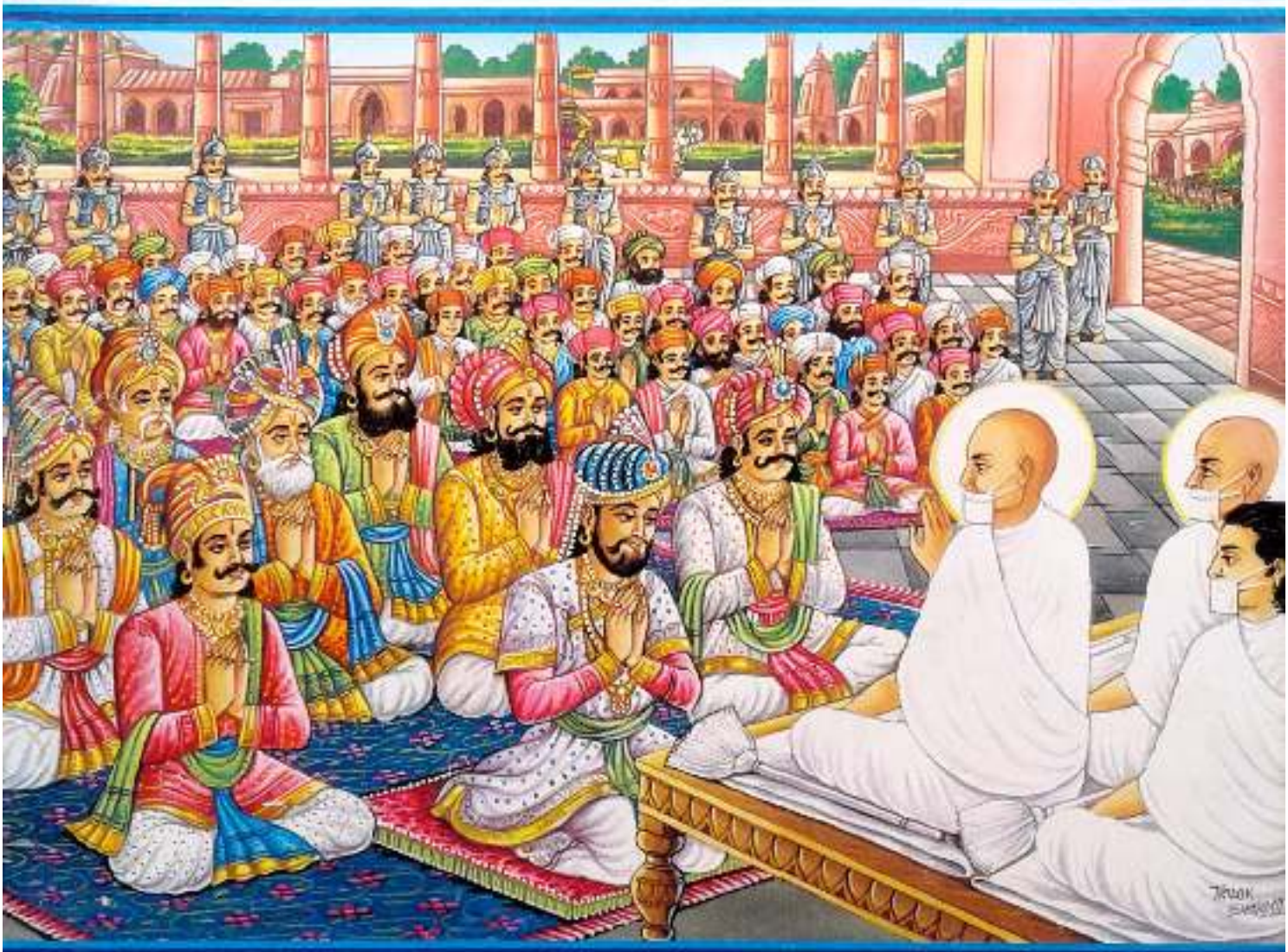

पद्मोदय जैन सचित्र कथा माला-2

२

डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म.सा.

Scanned by CamScanner

एक बात आपसे भी....

महान् आत्माएँ प्राणियों का कल्याण करने के लिए धरती पर ज़न्म लेती हैं। ये महापुरुष अपने संकल्प बल से समाज में नयी चेतना जाग्रत करते हैं। इतिहास के पृष्ठों पर ऐसे यशस्वियों के नाम अमर रहते हैं। ऐसे ही एक महान युगपुरुष का जन्म विक्रम की अठारवीं शताब्दी में हुआ। वह अमर यशस्वी नाम है—**एक भवावतारी आचार्यसम्राट् श्री जयमल जी म. सा.**।

एक भवावतारी आचार्यश्री जयमल जी म. सा. वैराग्य मूर्ति जम्बू कुमार की तरह महान् वैराग्य के धनी थे। अक्षय पुण्यों के निधान थे, तो धन्नाजी की तरह पग-पग पर सफलता और विजय उनके चरणों को स्पर्श करती हुई दिखाई देती है। उनकी विनम्रता और गुरु भक्ति गौतम की तरह अद्‌भुत थी। मुझे लगता है प्राण ऊर्जा का ऐसा अद्‌भुत स्रोत, चैतन्य का चरम विकास सामान्य मानव काया में होना एक अलौकिक बात है।

एक भवावतारी आचार्यसम्राट् श्री जयमल जी म. सा. के जीवन के घटना प्रसंग बालकों में संस्कार निर्माण के लिये अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं। चित्रकथा के माध्यम से बाल-मस्तिष्क इन घटनाओं को शीघ्र समझ सकता है।

इस पुस्तक में सरल भाषा एवं रोचक शैली के माध्यम से आचार्यश्री के दिव्य जीवन की कुछ खास-खास घटनाओं को 'जय ध्वज' के आधार पर चित्रों सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। चित्रकथा के प्रथम भाग में जन्म से लेकर दीक्षा तक के प्रसंगों को लिया गया है। इस द्वितीय भाग में उनके बड़ी दीक्षा से लेकर दिल्ली विहार और बादशाह मुहम्मद के शहजादे को प्रतिबोध देने तक का वर्णन किया गया है। अगले कुछ भागों में उनके विराट् संयममय जीवन प्रसंगों को संग्रहित करने का प्रयास किया जायेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक भवावतारी आचार्यसम्राट् श्री जयमल जी म. सा. का पवित्र चरित्र जो भी पढ़ेगा, उसके जीवन में परिवर्तन की लहर अवश्य उठेगी और वह अन्तर्मुखी बनकर जीवन को त्याग, संयम, तप की ओर गतिशील करने का प्रयत्न करेगा। इसी विश्वास के साथ.....!

—मुनि डॉ. पद्‌मचन्द्र

- **पुस्तक** : पद्मोदय जैन सचित्र कथा माला–2 (जय जस गाथा–द्वितीय भाग)
- **लेखक** : बारह व्रतों के प्रबल प्रेरक डॉ पदमचन्द्र जी म. सा.
- **संस्करण** : प्रथम, जनवरी 2007
- **मूल्य** : 25/- रूपये मात्र

• प्रकाशक : •

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चैन्नई

• चित्रांकन एवं प्रिंटिंग : •

पद्‌मोदय प्रकाशन

A-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी. रोड, आगरा-2 दूरभाष : (0562) 2851165,

Scanned by CamScanner

पद्मोदय जैन सचित्र कथा माला-1

जय-जस गाथा

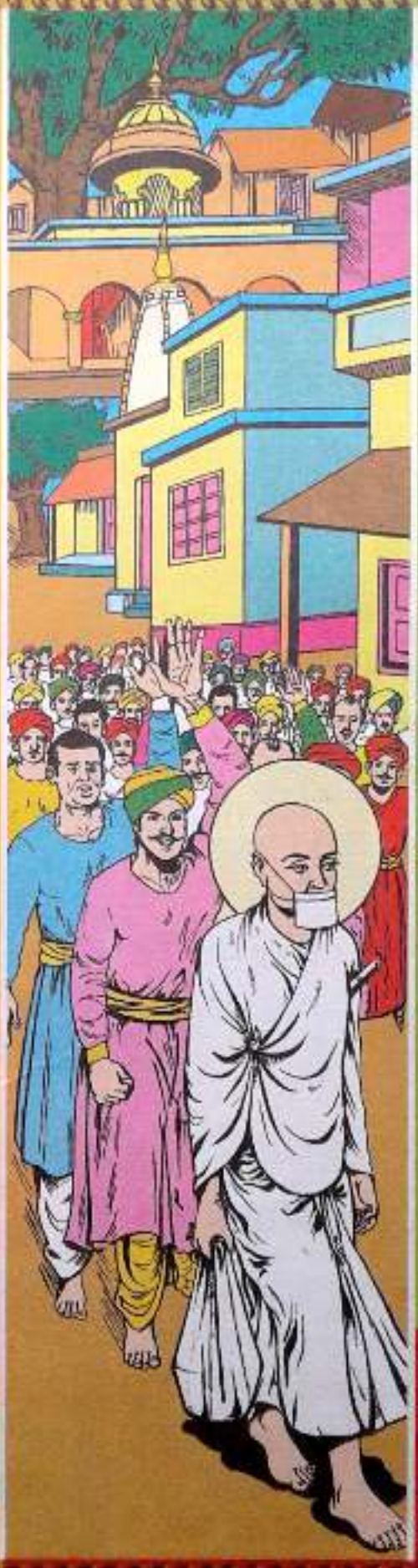

आशीर्वाद प्रदाता

आचार्य प्रवर श्री शुभचन्द्र जी म. सा.

संयम शिरोमणि पण्डित रत्न

उपाध्याय श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा.

लेखक

जयगच्छीय दशम पट्टधर आचार्यप्रवर

श्री लालचन्द्र जी म. सा. के सुशिष्य

डॉ. श्री पद्मचन्द्र जी म.सा.

सम्पादक

संजय सुराणा

प्रकाशक :

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

Scanned by CamScanner

क्या कहाँ

3
बड़ी दीक्षा

6
मुनि जयमल के अतिशय युक्त बुद्धि का चमत्कार

7
पुष्कर-प्रवास से मिला कवित्व का प्रसाद

8
प्रथम प्रवचन रायपुर में

10
जैतारण पट्टी में धर्म उद्योत

11
प्रथम चातुर्मास सोजत में

11
मोहन नन्दन पाप निकन्दन

12
घर आयी गंग-धार-लाछां का स्वप्न साकार

17
लाछांदे का दीक्षाग्रहण

20
सत्य धर्म के अग्रदूत

21
पाखण्ड पर पहली विजय : सत्य धर्म की

27
धर्म-रक्षकों का रक्षक धर्म

29
तपस्याओं दीक्षाओं का मेला

29
बादशाह मोहम्मदशाह पर प्रभाव

30
शाहजादा काबल हुआ

Scanned by CamScanner

बड़ी दीक्षा :

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री भूधरजी म. सा. जन-मानस के अन्तर् में धर्म की ज्योति जगाने का लक्ष्य लिये अपनी धर्म-यात्रा के पथ पर बढ़ते जा रहे थे। उनके साथ उनके शिष्य वृंद में मुनि श्री जीवनदासजी म. सा., मुनि श्री नारायणदासजी म. सा., मुनि श्री रघुनाथजी म. सा., मुनि श्री लालजी ऋषि म. सा. आदि संत थे। उनके कुछ पीछे उदीयमान नक्षत्र नवदीक्षित मुनि श्री जयमलजी म. सा. भी चल रहे थे।

मेड़ता से सीधी सड़क छोटे-मोटे गाँवों को छूती हुई आगे बढ़ रही थी। मिगसर का कृष्ण पक्ष चल रहा था और सर्दी भी शुरू हो रही थी। खेतों में फसल लहलहा रही थी।

चलते-चलते सभी संत पास के एक गाँव में पहुँचे। आचार्यश्री गाँव के स्थानक में पधारे ! यथास्थान अपना भण्ड उपकरण (सामान) रखकर ईर्यावहि सम्पन्न कर आचार्यश्री आदि सभी संत पाट पर विराजमान हुए और आचार्यश्री ने "णमो अरिहंताणं" के पाठ के साथ लोगों के समक्ष प्रवचन शुरू किया। नवदीक्षित मुनि श्री जयमल जी म. सा. भी उनके पास के पाट पर बैठे नवोदित भास्करसम शोभायमान हो रहे थे और लोगों का ध्यान बरबस ही उनकी ओर खिंचा जा रहा था।

Scanned by CamScanner

आचार्यश्री ने चार शरण अरिहंत, सिद्ध, साधु और धर्म पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन पूर्ण किया। सभी श्रावक-श्राविका अपने-अपने घरों को वापस जाने लगे। मुनिगण स्वाध्याय में लीन हो गये।

नवदीक्षित मुनि श्री जयमल जी म. सा. के आज उपवास होने से उन्हें आहार नहीं करना था; अतः आचार्यश्री की आज्ञानुसार वे दशवैकालिक सूत्र कण्ठस्थ करने बैठ गये। कुछ बहुत ही कठिन और देरी से कण्ठस्थ होने वाले सूत्र भी उन्होंने अतिशीघ्र कण्ठस्थ कर लिए और मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. गोचरी करके उठे तो उन्हें सुना दिये। वे आश्चर्य चकित रह गये। सोचने लगे–'अद्‌भुत है नवदीक्षित मुनि श्री जयमल जी म. सा. की स्मरण शक्ति और बुद्धिबल'।

मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. कभी काशी के विद्वान पंडित रहे थे। आचार्यश्री की आज्ञा से वे मुनि श्री जयमल जी म. सा. को आगम का ज्ञान दे रहे थे।

मुनि श्री नारायणदास जी म. शीघ्र ही आचार्यश्री के पास गये और युवा मुनिश्री की प्रतिभा और कौशल की असाधारणता के विषय में चर्चा की। पूज्यश्री को अपनी पूर्वधारणा का अनुमोदन इस प्रकार पाकर प्रसन्नता हुई।

उन्होंने सोचा–'मुनि श्री जयमल जी म. असाधारण हैं, होनहार हैं। अविलम्ब ही इनकी बड़ी दीक्षा हो जानी चाहिये।' आचार्यश्री ने बड़ी दीक्षा देने की तिथि छोटी दीक्षा के एक सप्ताह के बाद की यानी मिगसर वदी ९ निश्चित की और यह लाभ बिखरणिया श्रीसंघ की भाव भरी विनति को देखकर उन्हें दे दिया।

बिखरणिया श्रीसंघ ने नवदीक्षित मुनि श्री जयमलजी म. सा. के सांसारिक परिजनों और आसपास के श्रीसंघों को इसकी सूचना कर दी। एक तो लाँबिया के कामदार साहब के सुपुत्र, फिर छह मास की ब्याहिता के त्यागी और साथ ही असाधारण बुद्धि के धारक, ऐसे उत्कृष्ट त्यागी वैरागी ब्रह्मचारी भीष्म प्रतिज्ञाधारी नवदीक्षित मुनि श्री जयमल जी म. सा. के दर्शन करने के लिए भी आसपास के गाँवों से हजारों की संख्या मे लोग आने लगे। बिखरणिया के समाज को गौरव की अनुभूति हो रही थी कि मुनि श्री जयमल जी म. सा. जैसे सन्त की बड़ी दीक्षा का शुभ अवसर उनके गाँव को मिला।

बड़ी दीक्षा के दिन आचार्यश्री शिष्य मण्डली के साथ बिखरणिया गाँव के बाहर स्थित एक विशाल वट वृक्ष के नीचे पधार गये। बड़ी दीक्षा समारोह प्रारम्भ हुआ। मेहताजी सपरिवार उपस्थित थे। सर्वप्रथम मुनि जयमल जी म. सा. अपने स्थान पर खड़े हुए। आचार्यश्री एवं अन्य सभी सन्तों की वन्दना कर उन्होंने इर्यापथिक क्रिया सम्बन्धी काउसग्ग करते हुए तीर्थंकर स्तवन किया और आचार्यश्री के सम्मुख नत-मस्तक होकर, करबद्ध रूप में शान्त खड़े हो गए।

Scanned by CamScanner

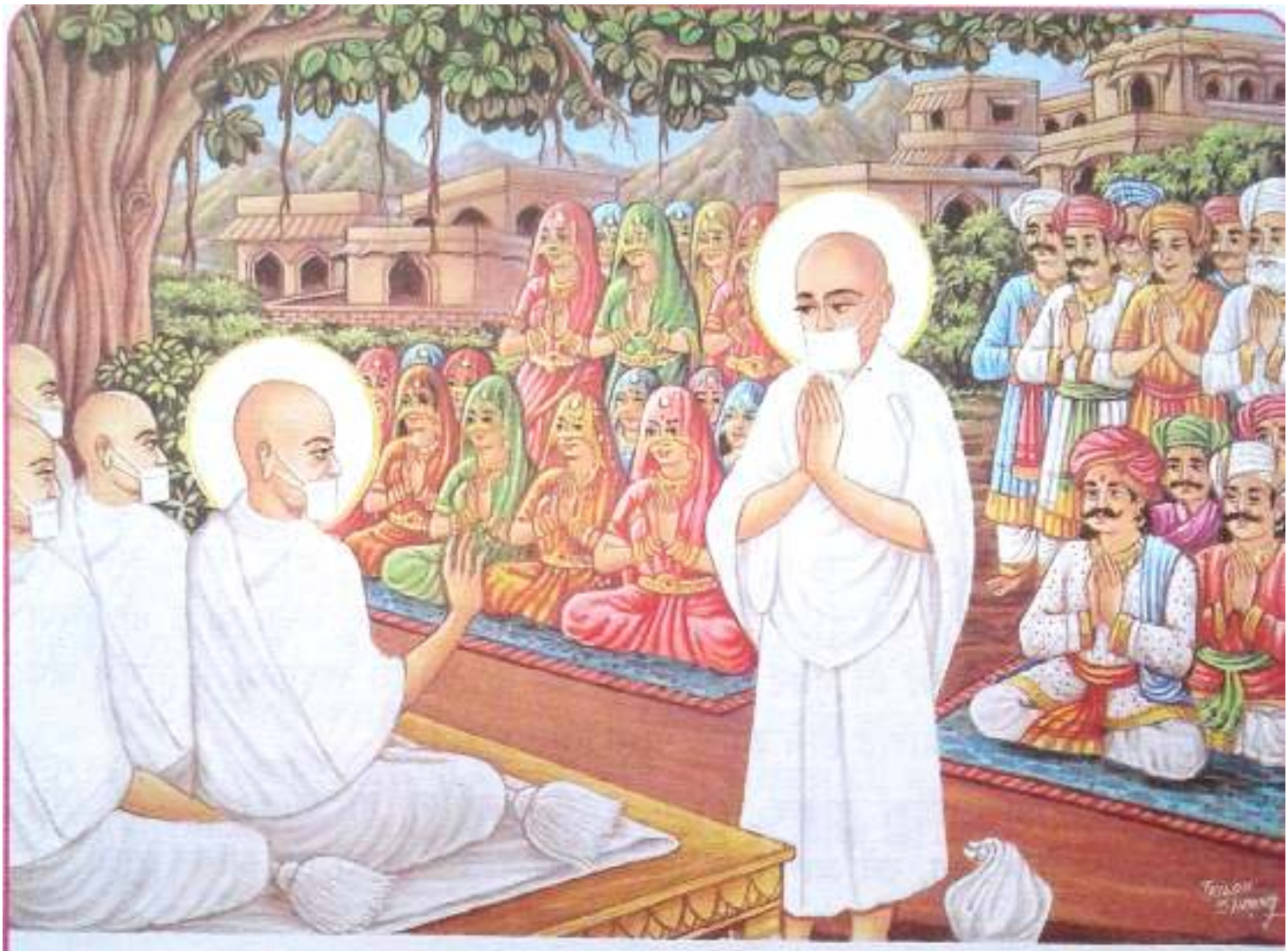

आचार्यश्री ने कहा—"लघु दीक्षा में तो सर्व पापों से निवृत्ति की प्रतिज्ञा की जाती है, किन्तु बड़ी दीक्षा का अर्थ है—साधुचर्या का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर, तद्नुसार आचरणार्थ स्वयं प्रतिज्ञाबद्ध होना। इसमें धर्मपालन की श्रद्धा के साथ पंच महाव्रतों को अंगीकार किया जाता है।"

उन्होंने आगे बताया—"साधु के लिए इन महाव्रतों का पालन, चार कषायों का त्याग, क्षमा भावना अपनाना, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना आदि सभी गुणों का होना परमावश्यक है। ऐसा साधु ही पूज्य और वन्दनीय हो सकता है। अल्प समय में ही जो प्रतिभा और पराक्रम मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने प्रकट किया है, उससे विश्वास होता है कि ये ऐसे ही असाधारण संत बनेंगे।" आचार्यश्री ने मुनि श्री जयमल जी म. सा. को विधि सहित बड़ी दीक्षा धारण करवायी और कहा—"आज से इनके लिये एक मण्डल पर साथ बैठकर गौचरी करने का एवं सभी की सेवा करने का, ज्ञान-दर्शन-क्रिया के विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया है। अब इन्हें पूर्ण रूप से हमारा मार्गदर्शन रहेगा।

आचार्यश्री भूधर जी महाराज और मुनि जयमल जी की जय-जयकार के साथ बड़ी दीक्षा का समारोह सम्पन्न हुआ।

Scanned by CamScanner

मुनि जयमल के अतिशय युक्त बुद्धि का चमत्कार :

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री भूधर जी म. सा. आदि संतों का विहार पुष्कर की दिशा में गतिमान था।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. की प्रखर बुद्धि देखकर आचार्यश्री ने मुनि नारायणदास जी म. सा. को आज्ञा देते हुए कहा कि नवदीक्षित मेधावी मुनि श्री जयमल जी म. सा. को खूब अध्ययन करवाया जाय। यह सुयोग्य पात्र है, इस पात्र को ज्ञानमृत से परिपूर्ण कर दो। जैसे शंख में रखा हुआ दूध अमृत रूप रहता है, उसी भाँति मुनि श्री जयमल जी को दिया गया ज्ञान शासन उद्योत में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. संस्कृत, प्राकृत, काव्य, कोष, छंद, अलंकार के धुरन्धर विद्वान थे। जैन दीक्षा से पूर्व आजीविकोपार्जन हेतु कथा वार्ता भी किया करते थे। किन्तु आचार्य श्री भूधर जी म. सा. की करुणामय सद्कृपा से संयम रूप सम्यक् मार्ग पर उन्हे आरूढ़ होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पूज्यश्री का आदेश पाकर उनका हृदय पुलकित हो उठा। उन्होंने मुनि श्री जयमल जी म. सा. को आगम के गूढार्थों का रहस्य बताते हुए आगम सूत्रों को कण्ठस्थ करवाना प्रारम्भ किया। मुनि श्री जयमल जी म. सा. की अति तीक्ष्ण बुद्धि को देखकर वे कई बार आश्चर्यचकित होकर अहो भाव से बोल उठते—"मुने ! मुझे बहुत प्रमोद भाव है तुम्हारी कुशाग्र मति पर एवं विनय युक्त प्रबल पुरुषार्थ पर। कितना गजब का तुम्हारा इन्द्रिय निग्रह है।" इस पर मुनि श्री जयमल जी म. सा. विनययुक्त नतमस्तक होकर कहते—"भंते ! यह सब आपकी एवं आचार्यश्री की कृपा का सुफल है।"

आज मुनि श्री जयमल जी म. सा. के उपवास का पारणा था। उन्होंने दृढ़ संकल्पपूर्वक अभिग्रह धारण किया कि जब तक निरियावलिका पंचक (पाँच आगम) कण्ठस्थ नहीं कर लूँ तब तक पारणा नहीं करूँगा। इस दृढ़ निश्चय के साथ ही अपने इस भगीरथ प्रयास में दत्तचित्त होकर संलग्न हो गये। मनोयोग को केन्द्रित करके मात्र एक प्रहर (तीन घण्टे) में पाँचों आगमों (निरियावलिया, कप्पिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदशा) को कण्ठस्थ करके मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. को सुना दिया। मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. एवं अन्य सभी सन्त जयमल मुनि की इस अतिशय युक्त बुद्धि के चमत्कार को देखकर बहुत ही प्रमुदित हुए। इसे जिन-शासन उद्योत का श्रेष्ठ सगुन मान रहे थे।

Scanned by CamScanner

पुष्कर–प्रवास से मिला कवित्व का प्रसाद :

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री भूधर जी म. सा. मुनि मण्डल के साथ ग्रामानुग्राम पद विहार करते हुए पुष्कर पधारे। जैनेत्तर मतावलबियों की दृष्टि में पुष्कर को सभी तीर्थों का गुरु माना जाता है। कहा जाता है कि वाग्वागेश्वरी भगवती यहाँ की अधिष्ठात्रि है।

मुनि श्री नारायण दास जी म. सा. ने यहाँ के वातावरण को लक्ष्य में लेकर कहा–''मुनि जयमल ! मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम काव्य शास्त्र का भी अध्ययन करो और आगम के गूढ़ार्थों को सुगम एवं सरल काव्यों में रचना कर जिनशासन की प्रभावना करो। क्योंकि आम जनता आगम के गूढ़ार्थों को समझ नहीं सकती। उनके लिए तुम्हारा प्रयास सोने में सुहागे का काम करेगा।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने हाथ जोड़कर निवेदन किया–''भंते ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मुझे छन्द, अलंकार, काव्य आदि का विशेष बोध करवाईये।

मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. ने विधिवत् काव्य शास्त्र का अध्ययन करवाना प्रारम्भ किया। अद्भूत प्रतिभा के धनी मुनि श्री जयमल जी म. सा. कुछ ही दिनों में काव्य शास्त्रों में निपुण बन गये और उनके मुख से काव्य की अजस्र धारा प्रस्फुटित होने लगी।

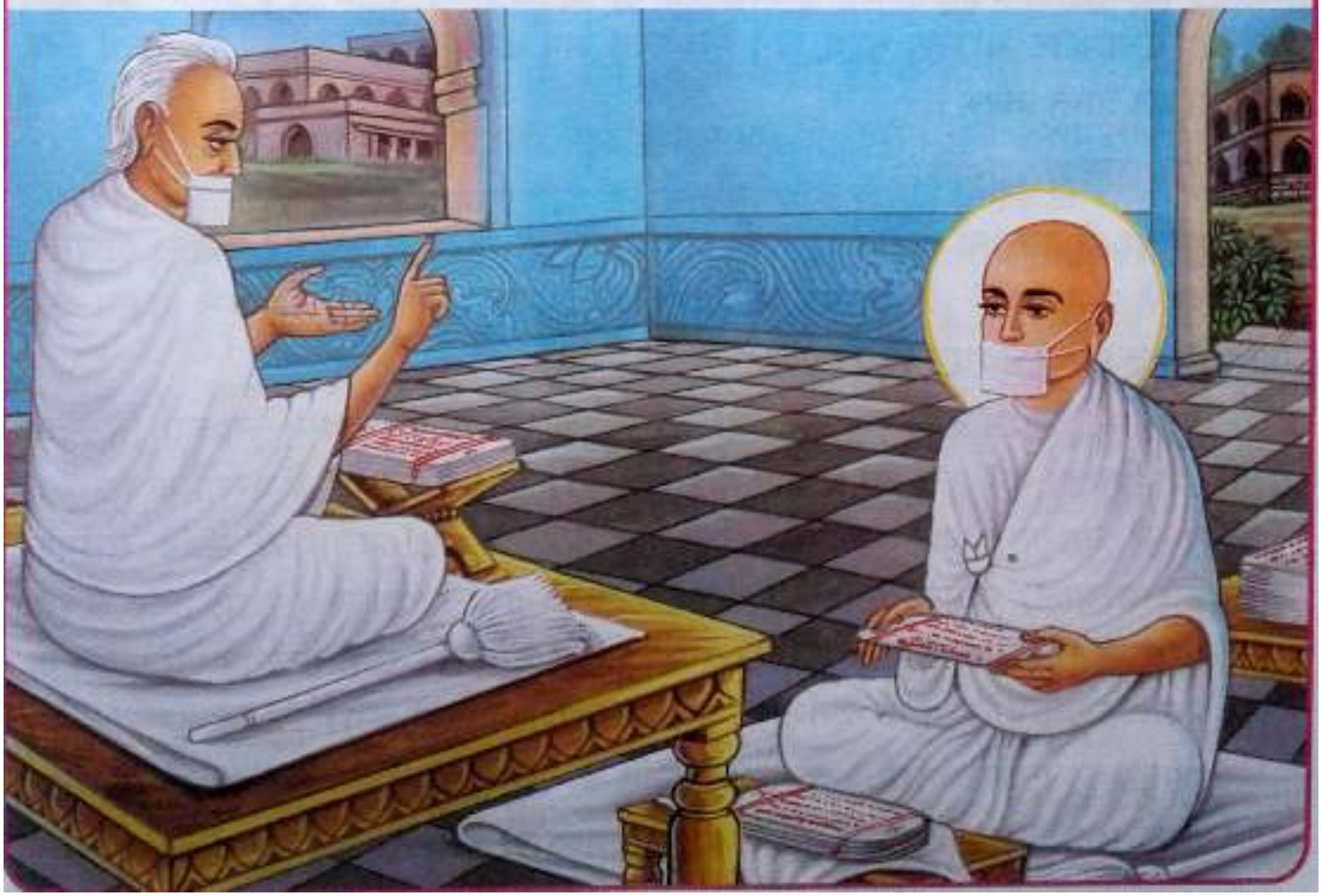

Scanned by CamScanner

नमो सिद्ध निरंजन, नमूं श्री सतगुरु पाय।
धनवाणी गुरुराज री, सुनतां पातक जाय।।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. की काव्य-यात्रा का प्रथम चरण था। गद्‌गद् कण्ठ से मुनि श्री नारायणदास जी म. सा. ने उनकी कवित्व शैली भाव भाषा की मुक्त कण्ठ से सराहना करने लगे।

मुनि श्री नारायणदासजी म. सा. उन्हे लेकर पूज्य श्री भूधर जी म. सा. के पास आये। मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने झुककर आचार्यप्रवरश्री के चरण छूये और दोनों हाथ जोड़कर तन्मयता से स्वरचित पद्य सुमधुर कण्ठ से सुनाने लगे–

वीर नमूं शासन धणी सर्वहित बांधव साम।
मुक्ति नगर का दायका मांगलिक तसु नाम।।
ज्ञानों में केवल बड़ा गणधर गौतम सार।
दानों मांहि अभय बड़ा, मंत्रों में नवकार।।

गुरु-द्वय काव्य धारा को सुनकर अति प्रमुदित हुए। आचार्य सम्राट् पूज्यश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा–"जिस प्रकार तीर्थराज पुष्कर वागेश्वरी के उद्‌गम स्थल के रूप में प्रसिद्ध है उसी प्रकार तुम्हारा जिनवाणी रूप काव्य भी तुम्हें चिरकाल तक प्रसिद्धि देगा और असंख्य भक्त जन मिथ्यात्व रूप कलिमल को धोकर सम्यक्त्व रूप सूचिता को प्राप्त करेंगे।

प्रथम प्रवचन रायपुर में :

पुष्कर से आचार्य सम्राट् पूज्यश्री अपने मुनिवृंद के साथ अजमेर पधारे। अजमेर के श्रावकों में पूज्यश्री के पदार्पण से खुशी की लहर छा गई। पूज्यश्री ने विशेष धर्म जागृति हेतु प्रेरक प्रवचन दिये।

मुनि श्री जयमलजी म. सा. की आगम आराधना एवं काव्य साधना निरन्तर प्रगति के शिखर को छूने का प्रयास कर रही थी। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् अजमेर से ब्यावर होकर मार्गवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए आचार्यश्री आदि संतगण रायपुर (मारवाड़) पधारे। संतों के पदार्पण के समाचार रायपुर (झूठा) और अनेक आस-पास के गाँवों, ठाकुर, जागीरदारों को भी हो चुके थे। सभी उत्साह एवं उमंग के साथ पूज्यश्री एवं मुनिवृंद के दर्शनार्थ, प्रवचन श्रवणार्थ आने लगे।

आगन्तुक एवं स्थानीय भक्तगणों ने मुनि श्री जयमल जी म. सा. की अप्रमत्त ज्ञान साधना से प्रभावित होकर आचार्य सम्राट् पूज्यश्री से जयमल जी म. सा. के प्रवचन

Scanned by CamScanner

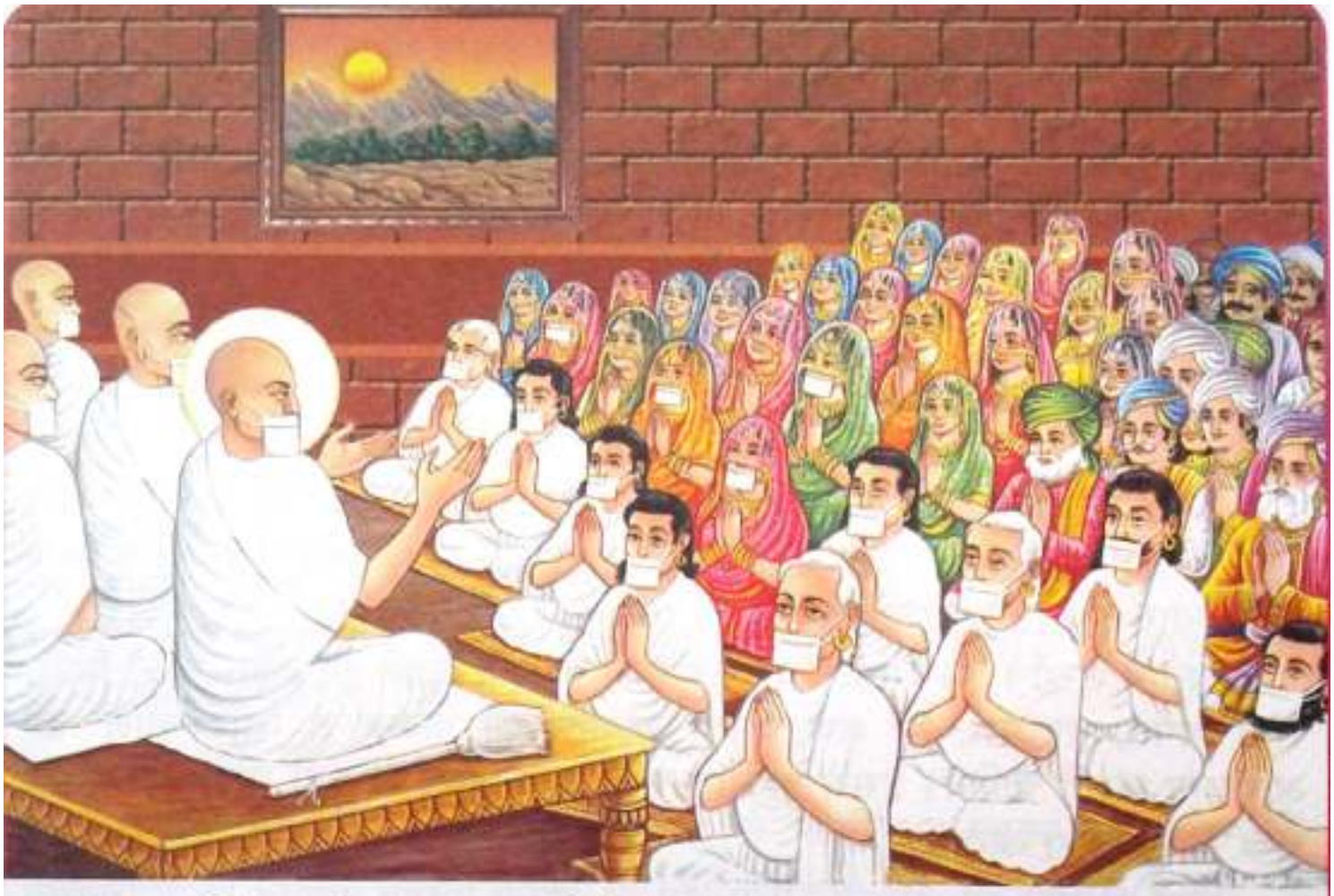

कराने का निवेदन किया। पूज्यश्री ने श्रावकों के आग्रह भरे निवेदन को ध्यान में रखकर मुनि श्री जयमल जी म. सा. को प्रवचन करने की आज्ञा दी।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर अन्य सन्तों के साथ प्रवचन स्थल पर पहुँचे। प्रवचन पीठ पर आसीन होने से पूर्व अपने से संयम पर्याय में ज्येष्ठ संतों को अनुक्रम से सभक्ति वंदन कर गुरु आज्ञा से प्रवचन प्रारम्भ किया।

सुमधुर आकर्षक वाणी में जब स्व-रचित 'चार मंगल' काव्य-पंक्तियों के गान से मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने प्रवचन प्रारम्भ किया तो श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगे। उन्होंने कहा—संसार के जीवों के पाप-नाश के लिए वीर प्रभु ने चार मंगल बताए हैं। प्रातः उठते ही जैसे हमारे लिए नमस्कार सूत्र का स्मरण आवश्यक माना जाता है, ठीक वैसे ही सोने से पूर्व अथवा अशरण रूप भय नाश के लिए हमें 'चार मंगल' रूप उत्तम शरण को अवश्य स्वीकार करना चाहिये।

जैसे दूर यात्रा पर जाने से पूर्व व्यक्ति को अपनी धन-सम्पदा की सुरक्षा को लेकर चिन्ता हो जाती है, इस चिन्ता से मुक्त होने के लिए वह अपना धन किसी प्रतिष्ठित श्रेष्ठी के पास धरोहर के रूप में रख देता है और इस विश्वास के साथ निश्चिन्त हो

Scanned by CamScanner

जाता है कि जब वह पुनः लौटेगा तो श्रेष्ठी से उसे अपना धन सुरक्षित रूप से वापस मिल जायेगा। ठीक इसी प्रकार आत्मगुण रूप धन श्रेष्ठी रूप–'चार मंगल' के शरण में रख देने से उस आत्मगुणों के लुटेरों से किसी प्रकार का भय नहीं रहता है। संसार में मद, विषय, कषाय, निन्द्रा, रूप, प्रमाद कदम-कदम पर आत्मगुण रूप धन को लूटने के लिए ताकते बैठे हैं। ऐसी स्थिति में अपना सर्वस्व 'चार मंगल' के पास रक्षार्थ धरोहर रखकर व्यक्ति निर्भय बन सकता है। मुनिश्री ने चार मंगल बताते हुए कहा–

प्रथम मंगल अरिहन्तो, दूजो सिद्ध मंगलीक।
तीजोमंगल साधु नो चौथो दया धर्म ठीक।।

मंगल विषयक काव्य रचना मुनि श्री जयमलजी म. सा. ने हाल ही में की थी। उसी के अंश का सार पाठ कर उन्होंने चार मंगलों को चार मंगलों में संकेतित किया और व्याख्या करते हुए इनके स्वरूप को समझाकर वर्णित किया।

अंत में उन्होंने 'चार मंगल' की शरण का महात्म्य बताते हुए कहा–उठते-बैठते, सोते-जागते, हर पल, हर क्षण, आत्म कल्याण की भावना से 'चार मंगल' की आराधना करनी चाहिये। इससे इहलोक-परलोक के सुख ही नहीं मुक्ति के अनन्त सुख भी सुलभ हो जाते हैं।

जैसे ही मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने अपना प्रवचन समाप्त किया, प्रवचन स्थल हर्ष ध्वनि से गूँज उठा। मुनि श्री जयमलजी म. सा. के प्रवचनातिशय से प्रभावित हुए अनेक श्रावकों ने विभिन्न त्याग व्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

प्रवचन समाप्ति के बाद व्याख्यान रसिक श्रावकों ने आचार्य सम्राट् पूज्यश्री भूधर जी म. सा. से निवेदन किया कि इतने अल्पकालिन संयम पर्याय वाले मुनि का इतना सुन्दर तात्विक-आगमिक हृदयग्राही प्रवचन सुनने का पहली बार ही अवसर प्राप्त हुआ है।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री ने उन्हें बताया कि मुनि श्री जयमल जी म. सा. का भी यह प्रथम प्रवचन ही था।

यह जानकर श्रोताओं को आश्चर्य ही नहीं, बल्कि मुनि श्री जयमल जी म. सा. के प्रति उनकी श्रद्धा-भक्ति और भी कई गुनी बढ़ गई।

शिष्य की इस गौरवपूर्ण सफलता पर आचार्यश्री एवं मुनि नारायण दास जी म. सा. आदि सभी संत अत्यन्त हर्षित हुए।

जैतारण पट्टी में धर्म उद्योत :

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री भूधर जी म. सा. अपने शिष्य समुदाय सहित रायपुर से विहार कर जैतारण पट्टी के क्षेत्रों में त्याग-वैराग्य की पावन गंगा प्रवाहित करते हुए

Scanned by CamScanner

सोजत की ओर विहार किया। इस वर्ष वर्षावास के लिए सोजत संघ को आश्वासन दिया गया था। मुनि श्री जयमल जी म. सा. का यह प्रथम चातुर्मास था। एकान्तर तप के साथ ज्ञान-साधना एवं काव्य रचना निर्बाध गति से चल रही थी।

प्रथम चातुर्मास सोजत में :

वि. सं. १७८९ के चातुर्मास का लाभ सोजत श्रीसंघ को मिला। नवदीक्षित मुनि श्री जयमल जी म. सा. के अध्ययन का कार्य तीव्र गति से चल रहा था।

दीक्षा के प्रथम वर्ष में ही मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने सात अंग सूत्र (आचारांग, सूत्रकृतांग आदि) को कण्ठस्थ याद करके सुना दिये।

चातुर्मास काल में मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र के आधार पर 'द्रोपदी चरित्र' को काव्यमय शैली में रचकर उस पर प्रवचन देने प्रारम्भ किये। भावपूर्ण और मधुर कण्ठ के मणि-कांचन योग ने मुनि श्री जयमलजी के प्रवचनों को अत्यंत हृदय-स्पर्शी बना दिया।

मोहन नन्दन–पाप निकन्दन

सोजत चातुर्मास के समय लाम्बिया से सपरिवार मेहता मोहनदास जी समदडिया दर्शनार्थ आये। जन-जन के मुँह से मुनि श्री जयमलजी म. सा. के ज्ञान-दर्शन-चारित्र की श्रेष्ठता एवं प्रवचन शैली की अद्‌भुत कला की प्रशंसा सुनकर उनका हृदय अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ। मेहता परिवार ने आचार्य सम्राट् पूज्य श्री भूधर जी म. सा. आदि सभी सन्तों को वन्दन-नमस्कार किया। आचार्य सम्राट् पूज्यश्री ने सहज मुस्कुराते हुए धर्म ध्यान करो का मंगल आशीर्वाद दिया और कहा–आपके संसार पक्षीय कुल दीपक मुनि श्री जयमल जी म. ने अति अल्पकाल में बहुत ही ज्ञान अर्जित कर लिया है।

मेहता जी ने हाथ जोड़कर सिर झुकाते हुए कहा–"यह सब आपकी कृपा एवं सान्निध्य का सुफल है।"

प्रवचन श्रवण के पश्चात् मध्यान्ह में विनयदेवी के साथ लांछा दे मुनि श्री जयमल जी म. सा. की सेवा में उपस्थित हुई।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. की दीक्षा के बाद प्रथम बार ही लांछा दे (संसार पक्षीय पत्नि) दर्शन कर रही थी। मुनिश्री के दर्शन करते-करते ही लांछा दे अत्यन्त भाव विह्वल होकर अतीत में खो गई.....स्वामी की दीक्षा की आज्ञा के समय जब मेरे भी दीक्षा लेने के भाव बनने लगे तब मोहवश परिजनों ने रोती बिलखती को गाड़ी में बिठाकर पीहर रियां ले गये। काश....उस समय मुझे भी दीक्षा लेने की अनुमति मिल गई होती तो मैं भी इन्हीं की तरह आत्म कल्याण की राह पर आगे बढ़ती।

Scanned by CamScanner

विनयदेवी ने झझकोरते हुए लांछादे की विचार तन्द्रा को भंग किया। बोली–''घर पर तो इनके दर्शनों के लिए इतनी तरसती है और अब कहाँ खो गई, अब जी भरकर दर्शन कर लो और कुछ पूछना हो तो निःसंकोच पूछ लो।''

लज्जा से लांछादे के सारे शरीर में कंपकंपी छूट गई। मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल पाया। आँखें जलजली हो गई। हृदय भर आया।

यह दृश्य देखकर माता महिमादे ने वहाँ ज्यादा रुकना उचित नहीं समझा। सभी ने मंगल पाठ श्रवण कर लाम्बिया को प्रस्थान किया।

लाम्बिया पहुँचने तक पूरे रास्ते में लांछादे का चिन्तन विविध पहलुओं पर चल रहा था। उसकी इस स्थिति से माता महिमादे बहुत चिन्तित हो गई। महिमादे बोली–''बड़ी बहुरानी, लगता है लांछादे का चित्त अस्वस्थ है।''

विनयदेवी ने कहा–''माताजी ! लांछादे का मन भी संसार से विरक्त हो रहा है। वह सोजत में मुनि श्री जयमल जी म. सा. के सामने प्रकट करना चाहती थी किन्तु लज्जावश कुछ बोल नहीं पाई।''

महिमादे–''ये संयम के बारे में जितना सोचती है, उतना मार्ग आसान नहीं है। तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है संयम का मार्ग।''

लांछादे–''माताजी ! आपका कथन सांसारिक दृष्टि से सत्य है, पर आध्यात्मिक दृष्टि से चिन्तन किया जाय तो लगता है कि सबसे सुगम मार्ग ही संयम का है। संयमी जीवन के लिए तो केवल २२ परिषह हैं। उनको जीतने वाला सुगति को प्राप्त करता है। जबकि सांसारिक जीवों के सामने तो कदम-कदम पर दुःख ही दुःख हैं और वे भी भव भ्रमण को बढ़ाने वाले हैं।'' यह सुनकर महिमादे मन ही मन जान गई कि अब यह पंछी मुक्त विहारी बनने की प्रतीक्षा में है।

श्रावण की रिमझिम वर्षा सभी के मन को शीतलता प्रदान कर रही थी। चातुर्मास में भी तपस्या की वर्षा रूपी झड़ी लगी हुई थी। मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने भी प्रथम बार मासखामण तप की आराधना की। आसोज महीने में पुनः मुनिश्री ने एक अट्ठाई की। इसी भाँति चार महीने अपूर्व धर्म जागरणा से चातुर्मास सम्पन्न हुआ।

घर आयी गंग–धार–लाछां का स्वप्न साकार

सोजत चातुर्मास सम्पन्न कर पूज्यश्री अपने शिष्य समुदाय सहित आसपास के क्षेत्रों को पावन करते हुए लांबिया पधारे। दीक्षा के पश्चात् मुनि श्री जयमल जी म. सा. का लाम्बिया की धरती पर प्रथम पदार्पण था। मुनिश्री की कीर्ति से सारा नगर गर्वित हो उठा।

Scanned by CamScanner

लाम्बिया के करीब-करीब सभी नर-नारी, आबाल, वृद्ध आये और आचार्यश्री एवं मुनि श्री जयमल जी म. सा. के दर्शन कर भाव विभोर हो गये। मगर लाम्बिया में एक नारी ऐसी भी थी जो उनके दर्शन-वंदन के लिये नहीं गई और वह थी लांछादे.....। आखिर वह मानिनी जो थी, अपने नारी सुलभ स्वभाव के कारण यही सोचती बैठी रही कि स्वामी स्वयं मेरे द्वार आयेंगे और तब मैं उन्हीं से पूछूँगी कि क्यों मुझे छोड़कर चले गये ? मुझे भी अपने साथ ले जाते। क्या मुझे इतनी कायर मानते थे कि मैं साधुचर्या नहीं पाल सकती ? मैं भी एक दिन अपने स्वामी को उत्कृष्ट संयम पालन कर विश्वास दिलाऊँगी कि नारी अबला ही नहीं होती, अपितु नारायणी भी बन सकती है।

मेहमानों के आने-जाने में और घर के काम में उलझे रहने से विनयदेवी और महिमादे को तो ध्यान भी नहीं रहा कि लाछांदे दर्शन करने गई या नहीं ?

रात्रि का प्रथम प्रहर था। घर के काम से निवृत्त होकर विनयदेवी ऊपर लाछां के कक्ष में आयी और उसे नीचे बुलाकर लायी। माता महिमादे ने कहा—''लाछां बहुरानी ! अब तो प्रसन्न होना चाहिए। देखो, मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने अपने कुल का कितना नाम दीपाया है। लोग वाह-वाह कर रहे हैं।''

लाछांदे—''माताजी ! एक तरफ तो मुझे अति प्रसन्नता है, पर साथ ही घोर निराशा भी है कि मैं परिजनों के दबाव के कारण संसार में ही बंधी हुई हूँ। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन राजुल की भाँति मैं भी अपने स्वामी के पद चिन्हों का अनुसरण कर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर बनूँगी।''

''सच....!'' महिमादे आश्चर्य के साथ एकटक उसकी ओर निहारती रही थी। यह सुकुमार पुष्प-सी नारी वज्र जैसे संयम मार्ग को ग्रहण कर सकेगी ? महिमादे को कल्पना करते झटका-सा लगा। रोम-रोम सिहर उठा। कुछ देर रुक कर महिमादे बोली—''बहू ! यह केश.....यह सिंगार....यह रूप.....यह काया.....क्या संयम की दुष्करता को सह सकेंगे....?''

''बाईजी ! क्या काम का यह बनाव सिंगार ? जिसके लिए था उन्होंने जोग ले लिया, फिर यह रूप, यह काया किसके लिए.....?

''तुम दर्शन करने क्यों नहीं गई बहुरानी ?''

''घर में सभी व्यस्त थे, कैसे जाती ? अकेली जाती तो कैसे जाती ! भाभीजी और आप तो दिन भर काम में ही लगी रहती हैं, मैं कैसे कहती कि साथ चलो।''

महिमादे ने कहा—''कल मेरे साथ चलना, जी भर दर्शन करना।'' लाछाँदे ने स्वीकृति सूचक मस्तक हिलाया और उसका मन कल्पनाओं में झूमने लगा।

Scanned by CamScanner

रात बीतने आई। लाछाँदे के मन में विचारों का प्रचण्ड आन्दोलन उमड़ पड़ा था। उसकी आँखें कब लग गईं उसे पता भी न चला। उदास तन्हाई में, तन्द्रा-सी हालत में वह एक स्वप्न देख रही थी। ''वह अलसाई सी लेटी है कि श्वेत वस्त्र परिधान पहने कोई दिव्य आकृति उसके पास आई। वह चौंककर खड़ी हो गई। जैसे-जैसे वह आकृति समीप आती गई, वह पहचान गई, यह तो उसके ही स्वामी मुनि श्री जयमल जी म. सा. हैं।

अचानक दिव्य वाणी मुनि श्री जयमल जी म. सा. के मुख से निकली–''देवी, संसार में कोई किसी का स्वामी नहीं, कोई किसी का दास नहीं। मोह, माया और भोग-विलास में फँसने के कारण सभी संसारी जीवों को यह भ्रम होता है। मेरी आत्मा स्वतन्त्र है, तुम्हारी आत्मा स्वतन्त्र है। आत्मा ही आत्मा का नाथ है।''

''प्रभु ! मुझ पामर नारी में इतनी बुद्धि कहाँ है ?''

''तुम पामर नहीं हो, तुममें भी अनन्त शक्तिशाली आत्मा रही हुई है। जिस रास्ते पर मैं चला, वह रास्ता तुम्हारे लिए भी खुला है। देवी ! जो अपने व्यक्तित्व को मिटा

Scanned by CamScanner

देता है, वही अपने अस्तित्व को स्थिर रखता है। उठो और देखो, तुम्हारे आगे धर्म का साम्राज्य फैला हुआ है, जागो और आगे बढ़ो....!''

लाछाँ—''मैं कृतार्थ हो गई गुरुदेव ! मेरी धर्म भावना पुष्पित पल्लवित हो गयी।'' वह गुरुदेवश्री का आभार स्वीकार करने लगी।

अचानक स्वप्न टूट गया.....! तन्द्रा हट गई और लाछाँदे ने देखा कि प्रातःकाल का प्रकाश शयन कक्ष को प्रकाशित कर रहा है। वह उस स्वप्न पर ही विचार करने लगी, फिर उसके मन को एक अपूर्व शान्ति मिली। उसने अपने वस्त्र ठीक-ठाक किये और कमरे से बाहर आई। घर में कोई नहीं था, सभी दर्शन करने चले गये थे।

लाछाँ रसोई में गई और प्रतिदिन के भाँति सभी के लिए अल्पाहार की तैयारी करने लग गई। शायद अब बाईजी और भाभीजी आ जायें तो आज दर्शन करने जाना है। इसलिए वह वापस ऊपर कमरे में आकर वस्त्र बदलने लगी। अचानक उसकी नजर दूर गली के कोने पर पड़ी। देखा मुनि जयमल जी म. सा. पात्र झोली हाथ में लिये चले आ रहे थे। क्षण भर के लिए तो उसे विचार आया कि घर पर कोई नहीं है, कहीं वापस चले तो नहीं जायेंगे....?

Scanned by CamScanner

लाछाँ शीघ्र ही नीचे उतर आई। उस समय तक महिमादे और विनयदेवी भी आ चुकी थी। लाछाँ ने कुछ हर्ष और कुछ घबराहट में बताया—''वे...आ रहे हैं...! मैंने ऊपर से उन्हें देखा...!''

तीनों स्त्रियाँ हवेली के द्वार पर खड़ी हो गईं। सचमुच ही मुनि श्री जयमल जी म. सा. आ रहे थे। कल उनके उपवास था, आज पारणा है और गोचरी बहरने निकल पड़े हैं।

''पधारो....गुरुदेव....!'' महिमादे ने कहा।

मुनि श्री सीधे रसोई के पास पहुँचे। बोले—''सभी सूझते हैं, न....?''

''हाँ, गुरुदेव !''

फिर महिमादे और विनयदेवी ने प्रासुक कल्पनीय आहार-पानी बहराया, फिर लाछाँ से कहा—''लाछाँ बहू ! तुम भी बहराओ।''

लाछाँदे ने झुक-झुककर वन्दना कर बहराना शुरू किया। वह तो बहराती गई, उसका हाथ रुक ही नहीं रहा था, तभी मुनि श्री जयमल जी ने कहा—''बस....!''

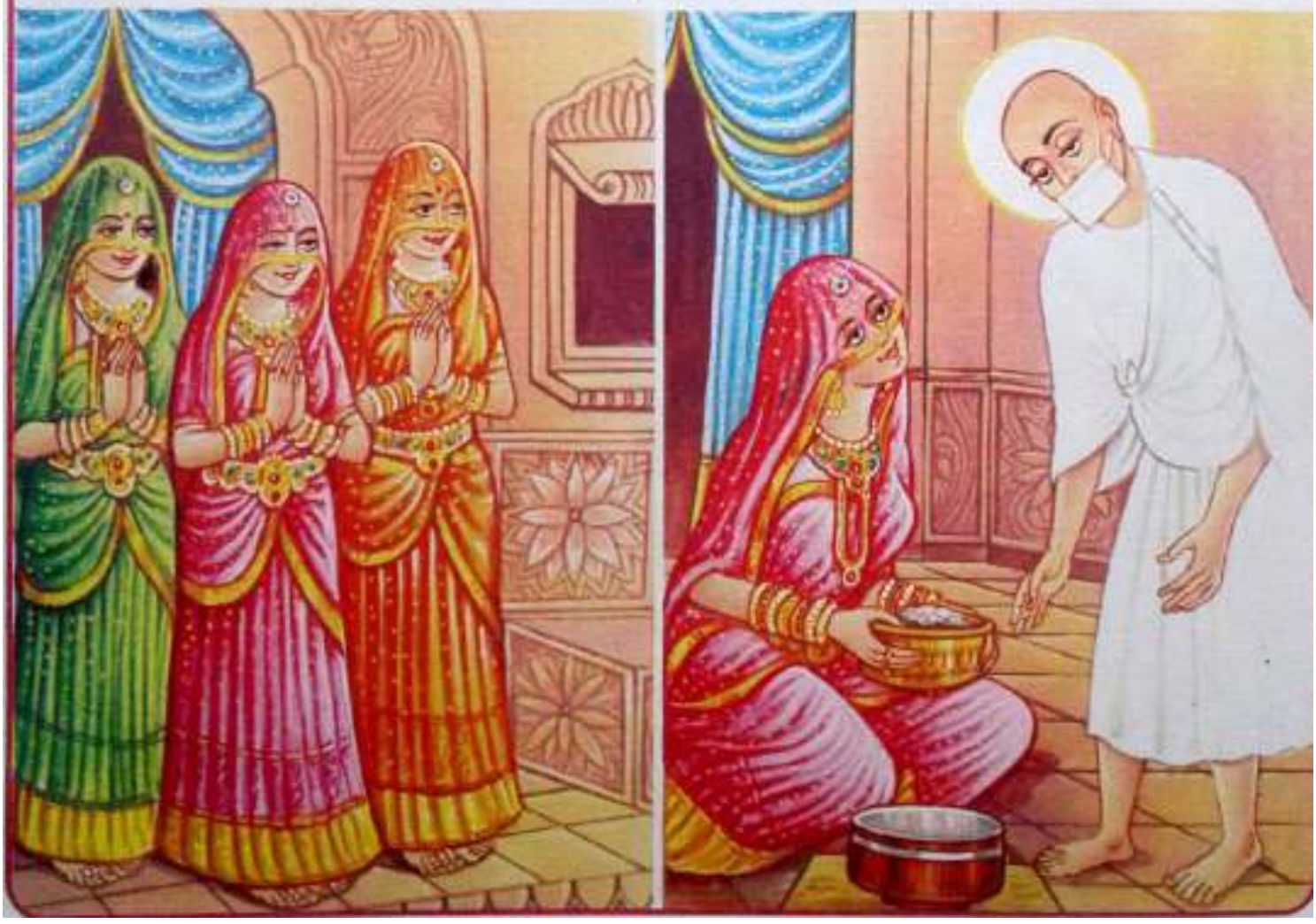

Scanned by CamScanner

अपार करुणा थी, निश्चल-निर्मल भाव से भरपूर उन नैनों में आत्म-भाव भरा हुआ था। लाछाँ को लगा इनके निर्मल नयनों से अमृत बरस रहा है, उसकी प्यास बुझ गई।

"कुछ धर्म ध्यान होता है ?" मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने पूछा। उनका इशारा लाछाँदे की ओर था।

महिमादे ने समझाकर कहा—"अभी तक आपका ध्यान ही नहीं छूट रहा हैं दर्शन भी तो आपके आज ही किये हैं।"

"उपाश्रय में गुरुदेव एवं अन्य बड़े मुनि महाराज हैं, दर्शन करने चाहिए।" यह कहकर मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने मांगलीक सुनाया और वे अगले घर के लिए चल दिये। लाछाँदेवी को प्रत्यक्ष अनुभव हो गया कि उसके स्वामी कितने उदार, कितने ज्ञानी हो गये हैं। उसने दर्शन प्रवचन का लाभ उठाने का मन ही मन निश्चय किया।

लाछाँदे का दीक्षाग्रहण :

लाम्बिया में मुनि श्री जयमल जी म. सा. ही प्रतिदिन प्रवचन देते। उन दिनों उनकी काव्य रचना "सती द्रौपदी चरित्र" का गान और व्याख्यान चल रहा था। लाछाँदे भी नित्य ही आया करती थी।

लाछाँदे उनका प्रवचन बड़ी तन्मयता के साथ सुनती रही। कभी-कभी उसे लगता था कि जो कुछ व्याख्यान में या चौपाई में स्त्रियों के संयम आदि के सम्बन्ध में मुनि श्री जयमल जी म. सा. फरमाते,वह सब कुछ उसे इंगित करके ही कहा जा रहा है, मेरे मन की समस्याओं का समाधान इनके प्रवचनों में अपने आप हो रहा है।

लाछाँ ने भी व्रत, तप शुरू कर दिये। जब सुनती आज मुनि श्री जयमल जी म. सा. के उपवास है, वह भी उपवास कर लेती; आयंबिल है तो आयंबिल करती। महिमादे से रहा नहीं गया और उसने कहा—लाछाँ ! तुमने यह क्या करना शुरू किया है ? "बाईजी, पति का अनुकरण करना पत्नी का धर्म है न ! मैं उनका अनुकरण करती हूँ !" लाछाँ प्रसन्न होकर जवाब देती। धीरे-धीरे यह बात फैलने लगी कि लाछाँ के भाव ऊँचे हैं ।

एक दिन प्रवचन में द्रौपदी की चौपाई चल रही थी। श्रौता मंत्र मुग्ध हुए सुन रहे थे। मुनि श्री जयमल जी म. सा. बता रहे थे—सभी राज-सुख भोगने पर भी पाण्डव सुखी नहीं हुए। वे संसार की क्षण भंगुरता पर चिन्तन करते हुए द्रौपदी से दीक्षा के लिए सहमति माँगते हैं; किन्तु द्रौपदी थी सती शिरोमणि ! वह कहाँ पीछे रहने वाली थी ? उसने कहा—"आप पाँच संसार त्यागकर जायेंगे तो मैं पीछे संसार में किसके लिए रहूँगी ? मैं भी आपके पीछे दीक्षा लूँगी; संयम पालूँगी।"

Scanned by CamScanner

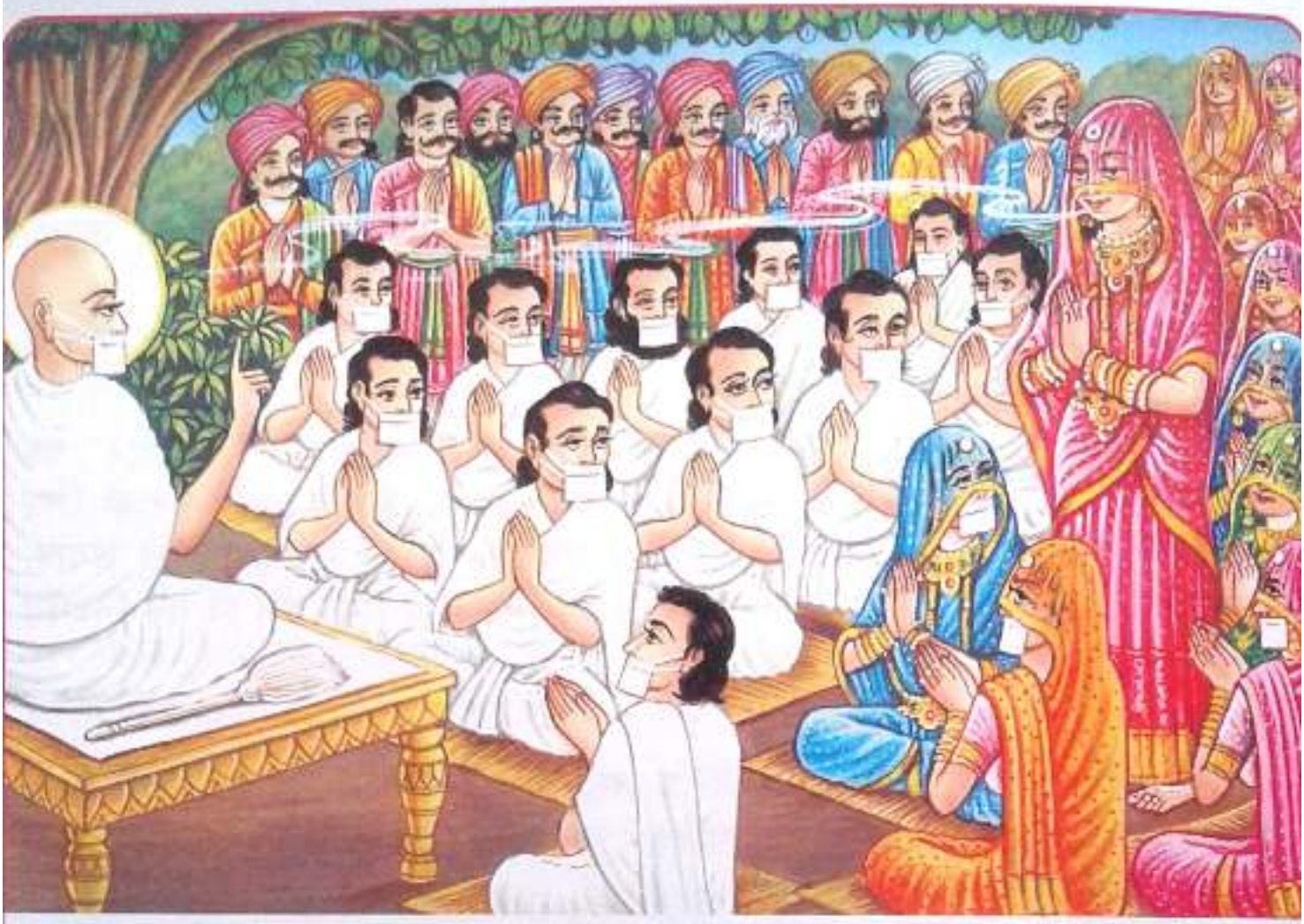

मुनि श्री जयमल जी म. सा. के व्याख्यान का रस सभी ले रहे थे। इतने में स्त्री समुदाय के बीच लाछाँदे खड़ी हो गई और हाथ जोड़कर निवेदन किया—''महाराज ! मुझे भी द्रौपदी की तरह दीक्षा दिला दें।'' लाछाँ के स्वर में बड़ी निर्भीकता और दृढ़ता थी। श्रौता सन्न रह गये। उसकी तरफ देखने लगे।

''भावना पक्की है ?'' मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने निर्मल मुस्कान के साथ पूछा।''

''भावना तो एक वर्ष से चल रही थी; भावना भाने वाली भी तैयार, किन्तु भावना फलवती कराने वालों की स्वीकृति आज ही मिली है। अब आज वह पक्की हो गई।''

शुभ कार्य होने का जब योग आता है, तो सभी शुभ संयोग, शुभमुहूर्त और अच्छे सहयोगी अपने आप मिल जाते हैं। योगानुयोग आचार्यश्री आदि सन्तों के दर्शन करने साध्वीश्री बालाँजी महासती अपनी शिष्याओं सहित वहाँ पधार गईं।

पूज्यश्री की सम्मति से साध्वी बालाँजी ने लाछाँदे से बातचीत कर उसके वैराग्य की परीक्षा ली तथा लाछाँदे के द्वारा प्रेरित अन्य चार कुमारीकाओं के वैराग्य की भी

Scanned by CamScanner

परीक्षा ली। उन सभी की सुदृढ़ मनःस्थिति जानकर निश्चय किया कि पाँचों बहनों को दीक्षा दी जा सकती है।

मुमुक्षु बहनों को दीक्षा देने का समारोह लाँबिया में मनाने का निश्चय हुआ।

आचार्यश्री भूधर जी म. सा. अपने शिष्य समुदाय के साथ गाँव के बाहर (जहाँ वर्तमान में आचार्य जयमल जैन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय है) विशाल वृक्ष के तले पाट पर शोभायमान हो रहे थे। थोड़ी दूर दूसरी ओर नीचे जमीन पर साध्वी श्री बालाँजी आदि महासतियाँ विराजमान थीं। सामने श्रावक-श्राविका। इस प्रकार चार तीर्थ का भव्य मेला लग रहा था।

आचार्यश्री ने सभी कुटुम्बी जनों की सम्मति से उन्हें दीक्षा प्रदान की। आचार्यश्री ने लाछाँदे और अन्य चार बहनों को दीक्षा देकर महासती बालाँजी को सौंप दी। लाछाँदे अब साध्वी लक्ष्मीदेवी जी म. सा. हो गईं। सचमुच दीक्षा केवल वेष परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन है।

लाम्बिया से आचार्यश्री ने रास ग्राम और महासती बालांजी ने मेड़ता की ओर अलग-अलग मार्गों से विहार किया। पूज्य श्री का अगला चातुर्मास जालोर में था।

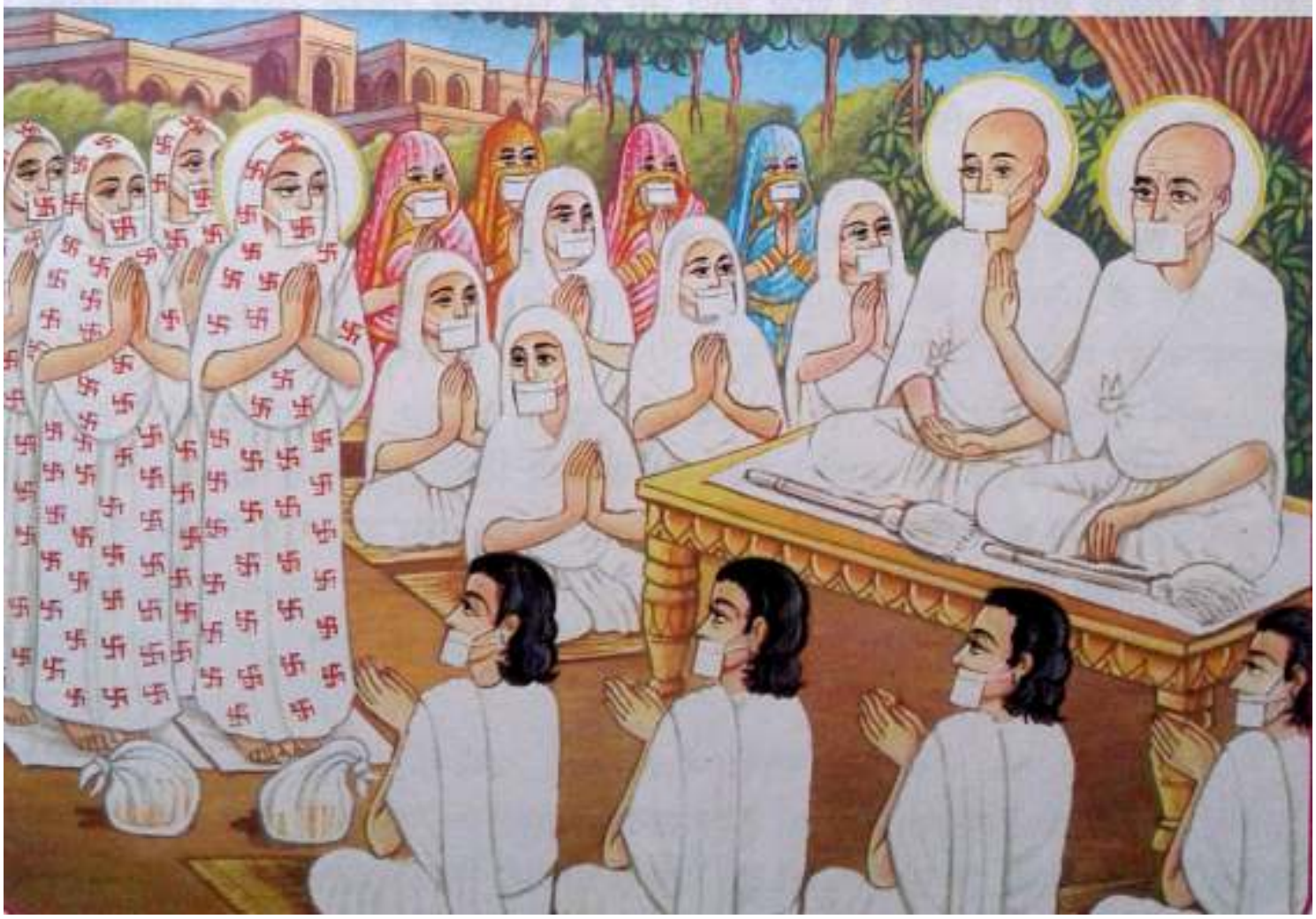

Scanned by CamScanner

सत्य धर्म के अग्रदूत

धर्म के मलिन रूप के प्रचलन वाला वह धर्म-मंदता का युग था, जिसमें साधु धर्म के नाम पर आडम्बरों और पाखंड़ों का ही साम्राज्य हो गया था। मेड़ता से जालोर के मार्ग में विहार करते मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने ग्राम-ग्राम में सत्य धर्म का प्रचार दृढ़तापूर्वक किया। त्याग, तप से दूर, वैभव और परिग्रह में फँसे पोतियाबंधों द्वारा भौतिकता को प्रधानता देने वाले श्रावक वर्ग को भ्रमित किया जा रहा था। मुनिश्री जयमलजी म. सा ने सच्चे साधु और सच्चे धर्म की छवि उनके मानस में बिठाने का पुण्य कर्म आरम्भ किया।

मार्ग के रास ग्राम में भी उन्होंने पाया कि ये मिथ्याचारी पोतियाबंध गुरांसा, यति आदि ही धर्म के ठेकेदार बने बैठे हैं जो सत्य धर्म और सच्चे साधु को दूषित बताते, उनकी निन्दा करते थे।

पोतियाबन्ध यतियों की उत्पत्ति का इतिहास भी बड़ा रोचक है। पाटन की राजसभा में आचार्य जिनेश्वर सूरि ने इतिहास के साक्ष्य देकर चैत्यवासी साधुओं की क्रियाओं को मिथ्या ठहरा दिया था। उस समय से ही चैत्यवासी साधुओं का बुरा हाल होने लगा था। तब उनके अनुयायियों ने राजा से अनुनय विनय किया तो जिनेश्वर सूरि ने मध्यम मार्ग बताया कि उन्हें साधु का वेष छोड़कर गृहस्थ रूप में पोतियाबन्ध (बिना सिले लम्बे वस्त्र) बाँधकर रहने की स्वीकृति दे दी। राजाज्ञा से उन्हें यही वेष अपनाना पड़ा और वे पोतियाबन्ध कहलाने लगे।

उस युग में तो पोतियाबंध निस्तेज हो गये थे, किन्तु क्रमशः उन्होंने कालान्तर में पुनः वर्चस्व प्राप्त करना आरम्भ कर दिया। मुनि श्री जयमल जी म. सा. के युग तक आते-आते वे फिर से छा गये और मिथ्याचार, पाखंड और आडंबरों का फिर से बोलबाला हो गया था। श्रावक वर्ग को पुनः सत्यधर्म से अति दूर कर दिया गया।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने धर्म को विकारों से मुक्त कर उसके सत्य स्वरूप को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता का अनुभव किया। पूज्यश्री का मन भी इस विकृत वातावरण के कारण ग्लानि और खिन्नता से भर उठा था। उनके चित्त में सत्य धर्म का प्रकाश फिर से फैलाने की लगन बलवती हो गयी थी। इस दिशा में सार्थक और सफल प्रयासों के लिए उन्हें मुनि श्री जयमल जी म. सा. पर ही सर्वाधिक विश्वास था।

सोजत, पीपाड़ जैसे बड़े नगरों में तो साधु मार्ग की दशा और भी बुरी थी। यतियों आदि का जबर्दस्त जोर था और जन-सामान्य पर उनका ऐसा प्रचण्ड आतंक था कि अनेक स्थलों पर तो साधुओं को गोचरी भी नहीं मिल पाती थी।

Scanned by CamScanner

पाखण्ड पर पहली विजय : सत्य धर्म की

आचार्यश्री खेजडला, चिरढ़ाणी होते हुए पीपाड़ पधारे। पीपाड़ में जैन समाज के लोग अलग-अलग यति परम्परा में विभक्त थे। उनमें भी पोतियाबन्ध यति परम्परा का विशेष जोर था। आचार्यश्री तो इससे अवगत थे। परन्तु वे शिष्यों को भी प्रत्यक्ष अनुभव करा देना चाहते थे। उन्होंने आज्ञा दी—"जयमल मुनि ! जाओ, गोचरी ले आओ।"

नजर नीची किये मुनि श्री जयमल जी म. सा. नगर की राजपोल की ओर बढ़ रहे थे। रास्ते में पोतियाबन्ध यतियों का 'राता उपाश्रय' आया। वहाँ पोतियाबंध यतियों का व्याख्यान चल रहा था। मुनि श्री जयमल जी म. सा. के कानों में भगवती सूत्र की गाथा सुनाई पड़ी और वे वहीं रुक गये। जहाँ रुके वहाँ जाली की खिड़की थी और सामने पाट पर बैठे एक पोतियाबंध यति व्याख्यान दे रहे थे।

प्रवचनकर्त्ता ने भीतर से ही मुनि श्री जयमल जी म. सा. को देखा और तनिक स्वर को ऊँचा करते हुए बोला—"आ जाओ.....आ जाओ भीतर। यहाँ तो द्वार सभी के लिए खुला है। साधुचर्या के ढोंग से क्यों भोली जनता को बहकाते हो।"

साधु मार्ग का उपहास होता देख मुनि श्री लोकोपकार की भावना से भर उठे और निर्भीकतापूर्वक उपाश्रय में प्रविष्ट हो गये। उन्हें देखकर पोतियाबंध जोश में आ

Scanned by CamScanner

गया। बोला–''तुम लोग भगवान महावीर स्वामी का नाम ले-लेकर कठोर संयम पालने का दिखावा क्यों करते हो ? तुमसे वह न तो पल सकता है, न ही इसका कोई लाभ है। आज के पाँचवें आरा में निर्वाण तो हो नहीं सकता। हम तो जो पाला जा सकता है, उसी रास्ते चलते हैं। चाहो तो तुम भी आ जाओ हमारे साथ।''

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने शान्त भाव के साथ गम्भीर वाणी में कहा–''यह सत्य नहीं कि इस युग में निर्वाण नहीं रहा या संयम मार्ग का पालन व्यर्थ है। हाँ, यह तुमने सत्य कहा कि इस मार्ग का पालन तुम जैसों के लिए संभव नहीं है। फिर उसकी अवहेलना करके पाप-बंध क्यों करते हो ?''

पोतियाबंध मुनि श्री जयमल जी म. सा. का उत्तर सुनकर सकपका गये। फिर संभलकर बोले–''काहे का पापबंध ? चौथे आरे में भगवान के समय में ही तो साधुत्व निभाया जा सकता था। पर अब पाँचवें आरे में कहाँ तो चौदह पूर्व और कहाँ का केवलज्ञान सबकुछ नष्ट हो गया। इस युग के लिए भगवान यह बात कैसे फरमा सकते हैं ?''

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने प्रबोधनपूर्वक कहा–''सुनिये यतिराज ! भगवान का शासनकाल २१००० वर्षों तक चलेगा। मुनित्व आज शेष नहीं रहा, सब समाप्त हो गया। ऐसा नहीं है। शास्त्रों में इसके प्रमाण हैं।''

पोतियाबंध ने हाथ नचाते हुए और आँखें मटकाते हुए कहा–''न जाने कौन-से शास्त्र की बात करते हो तुम। शास्त्रों का पाठ हम भी करते हैं, हमने तो कहीं यह उल्लेख नहीं पाया। अपनी सुविधा के लिए तुम लोगों ने नये शास्त्र का निर्माण तो नहीं कर लिया।''

यह सुनकर उपस्थित जन समुदाय ने ठहाका लगाया और मुनि श्री जयमल जी म. सा. के मुख की ओर सभी की दृष्टियाँ घूम गयीं। परन्तु साँच को आँच कहाँ। मुनिश्री ने उत्साहपूर्वक फिर कहा–''हाँ, भगवान ने यह भी फरमाया है कि १२ वर्ष के भयंकर दुष्काल के समय अल्पकाल के लिए धर्म में पाखण्ड आने वाला है। सो आ ही गया है, किन्तु धर्म का पुनः तेजस्वी होना निश्चित है।''

''अच्छा-अच्छा हम जैसे कुछ जानते ही नहीं। ज्ञान और धर्म के अवतार जी, आप मन से बातें बनाकर भोली जनता में क्यों भ्रम फैलाते हैं ?''

मुनि श्री –''भ्रम नहीं.....यथार्थ यही है। हम इसका प्रमाण दे सकते हैं।''

पोतियाबंध–''प्रमाण भी तुम अपनी पोथी से दोगे, उसका क्या भरोसा ?''

मुनिश्री –''हमारी पोथी से नहीं, हम आपकी पोथी का ही उपयोग करते हैं। लो हाथ कंगन हो आरसी क्या। आपके सामने इस समय कौन-सा शास्त्र रखा है ?''

Scanned by CamScanner

पोतियाबंध–''भगवती सूत्र' है। भगवान ने इसमें हमें ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें बताई हैं।''

मुनि श्री –''हम उन्हीं ज्ञान की बातों में वह बात बता दें जो हम अभी कह रहे हैं, तो आप क्या करेंगे ?''

यह चुनौती सुनकर तो पोतियाबंध की बोलती बंद हो गयी। वे इधर-उधर बगलें झांकने लगे। इसी समय संघपति ने बागडोर सँभाली। उन्होंने कहा–''यदि आपने इस पोथी से प्रमाण दे दिया तो हम सभी आपके अनुयायी हो जायेंगे।''

मुनि श्री जयमल जी म. सा.–''ऐसा करेंगे तो यह आपका सत्यधर्म की ओर मुड़ना ही होगा। ऐसा करके आप आत्म कल्याण के लिए सत्यधर्म को आधार मानेंगे।''

संघपति–''पहले निर्णय तो हो जाए कि सत्य क्या है ?''

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने पोतियाबंध की ओर देखते हुए कहा–''संघपति का कहना उचित ही है। अब आप ऐसा करें कि श्री भगवती सूत्र का बीसवाँ शतक निकालिये और उसका आठवाँ उद्देशक पढ़कर सभी को सुना दीजिये।''

संघपति और उपस्थित जन, मुनिजी की इस त्वरित बुद्धि से बड़े प्रभावित हुए। पोतियाबंध ने भी बड़ी ही शीघ्रता से यह संदर्भ पोथी में खोजा और उच्च स्वर में पढ़ने

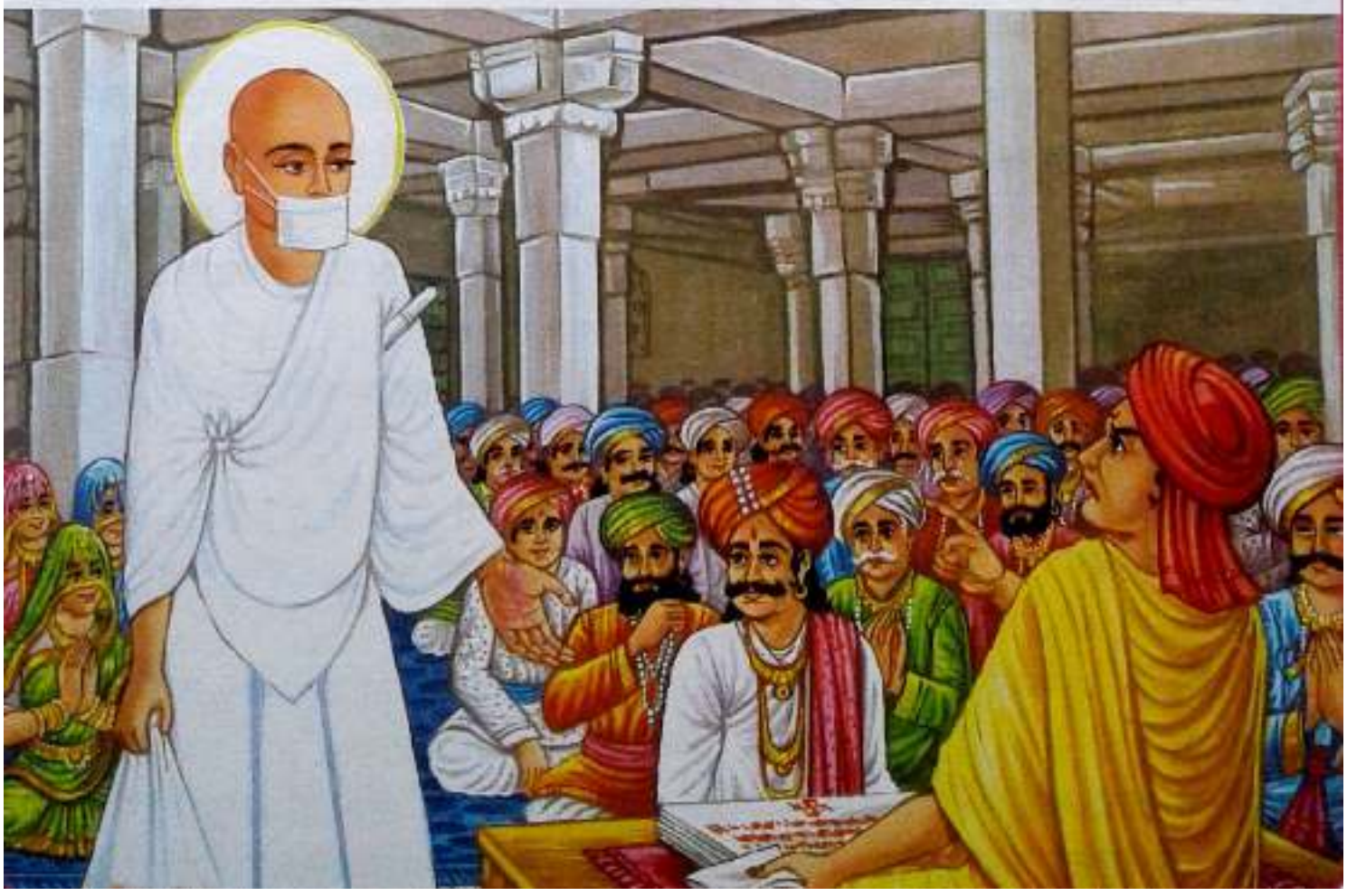

Scanned by CamScanner

लगा। आधी पंक्ति के बाद ही उनका स्वर मंद होते-होते रुक गया और जैसे वे मन ही मन गुनगुनाने लगे।

मुनिश्री जयमल जी म. सा. –"पढ़िये ! पढ़िये न ! सबको सुनाइये।" संघपति–"यति जी ! पढ़िये ना ! आप मौन क्यों हो गये ?"

मुनिश्री जयमल जी म. सा. –"ये पढ़ नहीं पायेंगे, इनके मतलब की बात जो नहीं है। हम यह सारा संदर्भ आपको यथावत् सुना देते हैं। दीजिए मेरे हाथों में यह पन्ना। संघपति ने पोतियाबंध यतिजी के हाथों से पन्ना लेकर मुनि श्री जयमल जी म. सा. के हाथों में रखा। मुनिश्री ने उदात्त स्वर में पाठ उच्चारित किया जिसमें प्रभु महावीर से गौतम स्वामी पूछते हैं–*"जंबुद्दीवे णं भंते ! भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सइ ?"* हे भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणीकाल में आपका तीर्थ कितने काल तक रहेगा ?

उत्तर में भगवान महावीर स्वामी फरमाते हैं–*"गोयमा....ममं एकवीसवास सहस्साइ तित्थे अणुसज्जिस्सइ।"* हे गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मेरा तीर्थ (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप धर्म तीर्थ) इस अवसर्पिणीकाल में इक्कीस हजार वर्ष तक विद्यमान रहेगा।

संघपति ने उठकर पोतियाबंध से पूछा–"क्या, यह बात यथातथ्य सत्य है ?" है ! मगर इस काल में वैसा साधुपना पल नहीं सकता !" पोतियाबंध दबी जबान से बोले।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने कहा–"अपने शिथिलाचार पर पर्दा डालने के लिए आगम विरुद्ध कथन क्यों कर रहे हो ? स्वयं की कमजोरी को स्वीकार करो।"

यह सुनकर पोतियाबंध यति गुस्से से उबलने लगा और जोर से बोला–"जा, जा..! निकल जा यहाँ से ! अरे ! देखते क्या हो ? इस नालायक को निकाल दो...!

यह सुनकर संघपति यति जी की ओर देखकर बोला–मुनि जी ने अपने कथन का शास्त्रोक्त प्रमाण दे दिया है। महाराज, यदि आपके पास अपनी धारणा का कोई प्रमाण हो तो दीजिये।"

पोतियाबंध–"अरे सत्य को प्रमाण की आवश्यकता ही क्या है ! इस मिथ्याचारी ने हमारी धर्मसभा में व्यवधान उत्पन्न कर दिया। भगाओ इसे.....हमारे श्रावकों को गुमराह करने वाला हमारी सभा में.....।"

मुनि श्री जयमल जी म. सा. –"हमारा अपमान करने का व्यर्थ श्रम क्यों कर रहे हैं। अपमान तो उसका संभव होता है, जिसे सम्मान की लालसा हो। हम तो समता भावना के साधक हैं, किन्तु आप भी पोतियाबंध न रहकर 'पोथियां बन्द' हो गये हैं। पोथियां तो आपने बन्द कर ही दी हैं, अब मिथ्याचार और शिथिलाचार का प्रचार भी

Scanned by CamScanner

बन्द कर दें तो श्रावकों पर बड़ा भारी उपकार करेंगे।''

संघपति–''किसी भी धर्मसभा में किसी को भी किसी का अपमान करने का अधिकार नहीं होता। महाराज जी ! अगर आपके पास कोई प्रमाण हो तो दीजिये, अन्यथा हम सभी आपको गुरु मानना छोड़ते हैं। कहिये, क्या मुनि श्री जयमल जी म. सा. का कथन सत्य है ? आपका मौन रहना स्वीकारोक्ति मानी जाएगी।''

पोतियाबंध शीष झुकाए मौन ही बैठे रह गये। उनके पास कोई उत्तर था भी नहीं। संघपति ने कहा–''तो आप अब हमारे संघ के पूज्य नहीं रहे। मुनिवर ठीक कहते हैं कि आप न तो साधु हैं न ही श्रावक हैं। भ्रम फैलाकर आपने बहुत पाखण्ड कर लिया–''अब यह न चलेगा। सच्चे धर्म का प्रकाश अब हमें मिल गया है।''

सभा में उपस्थित समस्त श्रावकगण अपने संघपति का समर्थन करने लगे। जयमुनि जी के प्रति उनके मन में सहज श्रद्धा उमड़ पड़ी।

संघपति ने मुनि श्री जयमल जी म. सा. को वन्दना करके कहा–''महाराजश्री ! आपको हमारा पीपाड़ श्रीसंघ 'वादिगजकेशरी' के सम्मान से सम्मानित करता है। आपने हमारा अज्ञान और मिथ्यात्व दोनों हटा दिये हैं। हम आपके शिष्य बनना चाहते हैं।''

हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए मुनि जयमल जी महाराज ने विनय के साथ कहा कि हम भी हमारे आचार्यश्री के शिष्य हैं। चाहते ही हैं तो चलिये, गुरुदेवश्री भूधर

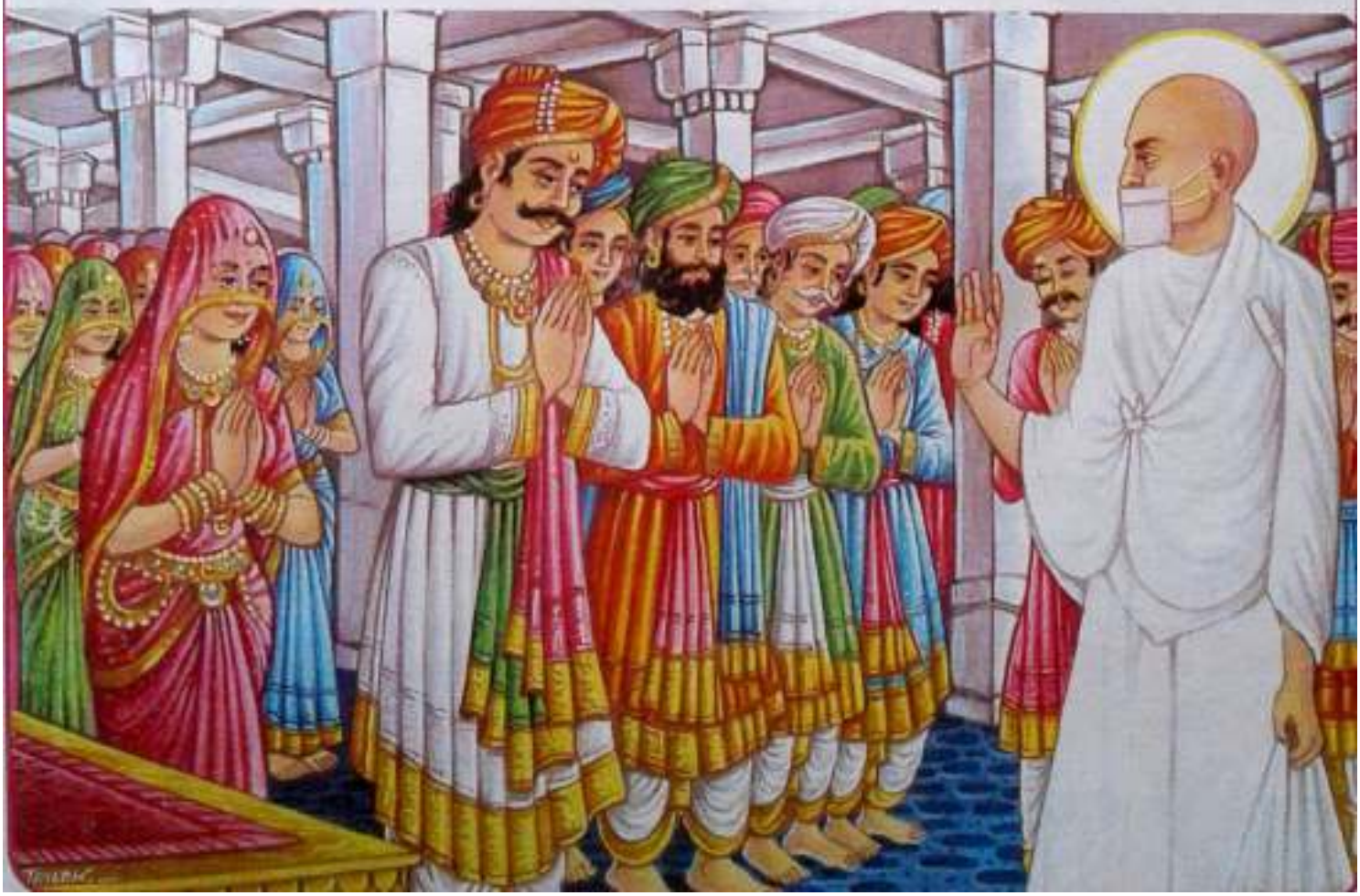

Scanned by CamScanner

जी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण कर ज्ञान, दर्शन, चारित्रय युक्त सच्चे धर्म की आराधना करें।

सभी पोतियाबंधी संघ वाले संघपति के साथ मुनि श्री जयमल जी म. सा. के पीछे-पीछे पूज्यश्री के पास आ पहुँचे। पूज्यश्री ने मुनि श्री जयमल जी म. सा. को आते देखकर पूछा—"क्या गोचरी ले आये ?"

"गुरुदेव ! आज स्थूल आहार की नहीं; धर्म के श्रद्धावनों की गोचरी लेकर आया हूँ। मैं तो नये श्रद्धावानों को सम्यक्त्व मार्ग के राही बनाने लाया हूँ।"

साथ में आये सभी श्रावकों ने पूज्यश्री के दर्शन-वन्दन कर अपार आन्तरिक शीतलता का अनुभव किया। पूज्यश्री ने सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सत्य धर्म का सार अपने संक्षिप्त प्रवचन में बताकर कहा—"यह भ्रम दूर कर दीजिये कि इस काल में मुक्ति संभव नहीं। मुक्ति को लक्ष्य कर जो जिन मार्ग की आराधना करता है, वह कर्म खपाकर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो सकता है।"

सभी नये श्रावकों ने पूज्यश्री के पास सच्चे जैनधर्म में श्रद्धा स्वीकार की। पूज्यश्री और जयमल जी म. सा. की जय-जयकार के साथ वे स्थानक से विदा हुए।

शिथिलाचार पर सत्यधर्म की यह पहली विजय थी, जिसके नायक थे मुनि श्री जयमल जी म. सा.।

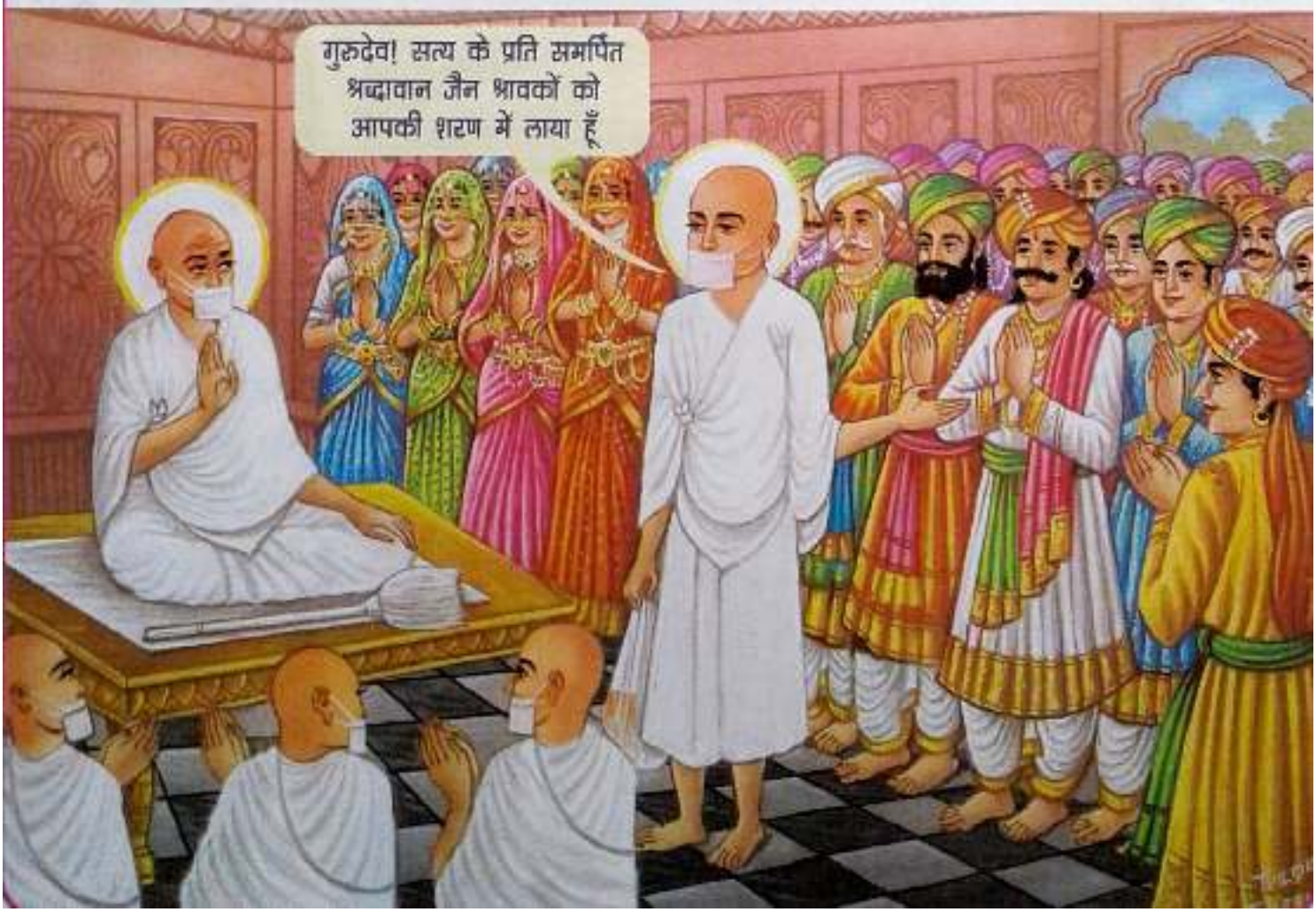

Scanned by CamScanner

धर्म-रक्षकों का रक्षक धर्म

पोतियाबंधों पर विजय प्राप्त करने के समाचार जोधपुर दरबार महाराजा अभयसिंह जी के पास पहुँचे। उन्हें मुनि श्री जयमल जी म. सा. के दर्शनों की तीव्र इच्छा हुई। उन्होंने विचार किया कि यदि पूज्यश्री आदि संत जोधपुर पधारेंगे तो यहाँ की प्रजा और संघ में धर्म की बहुत प्रभावना होगी। उन्होंने अपने दीवान रतनसिंह जी को आचार्यश्री की सेवा में भेजा।

आचार्य श्री भूधर जी म. सा. के समक्ष जब जोधपुर नरेश महाराजा अभयसिंह जी की विनती लेकर दीवान रतनसिंह जी उपस्थित हुए तो आचार्यश्री ने निरपेक्ष भाव से इतना ही कहा—''द्रव्य, क्षेत्र, काल की जैसी स्पर्शना होगी देखा जायेगा।''

जोधपुर नरेश महाराजा अभयसिंह जी को जब से दीवान रतनसिंह जी ने आकर समाचार दिये तो वे प्रतिदिन संतों के दर्शन की प्रतीक्षा में बिताते थे।

विहार करते-करते सन्तगण जोधपुर के समीप बनाड़ गाँव तक पहुँच गये। जब यह समाचार महाराजा अभयसिंह जी को मिला तो वे ऐसे प्रसन्न हुए मानो उन्हें कोई बहुमूल्य चीज मिल गई हो।

रतनसिंह—''महाराज ! अब तो पूज्यश्री भूधर जी महाराज शीघ्र ही यहाँ पधार जायेंगे।''

नरेश—''हाँ दीवान जी ! हाँ.....मुनि श्री जयमल जी म. सा. का आगमन भी तो होगा। क्या दिव्य छवि है उनकी। और उनके काव्यमय मधुर उपदेश तो सीधे हृदय में ही उतर जाते हैं।''

रतनसिंह—''उपयुक्त ही फरमाते हैं महाराज ! मुनिश्री जयमल जी म.सा. भी शीघ्र ही जोधपुर पहुँच जायेंगे। तीन-चार दिन में तो उनके दर्शन.....।''

नरेश—''नहीं.....नहीं दीवान जी ! हम इतने समय तक राह नहीं देख सकते हैं। हम आज ही बनाड़ जाकर दर्शन करने की भावना रखते हैं। आप तैयारी करें।''

बनाड़ ग्राम से बाहर एक वट वृक्ष के तले पाट पर विराजित आचार्यश्री एवं मुनि श्री जयमल जी म. सा. के दर्शन कर महाराज अभयसिंह के नेत्रों को अपार शीतलता और हृदय को असीम शान्ति मिल गयी। नरेश ने आचार्यश्री एवं सर्व सन्तों की भावभरी वंदना की।

''दया पालो.....धर्म लाभ लो.....।'' आचार्यश्री ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया एवं प्रवचनार्थ मुनि जयमल जी महाराज को निर्देश दिया।

Scanned by CamScanner

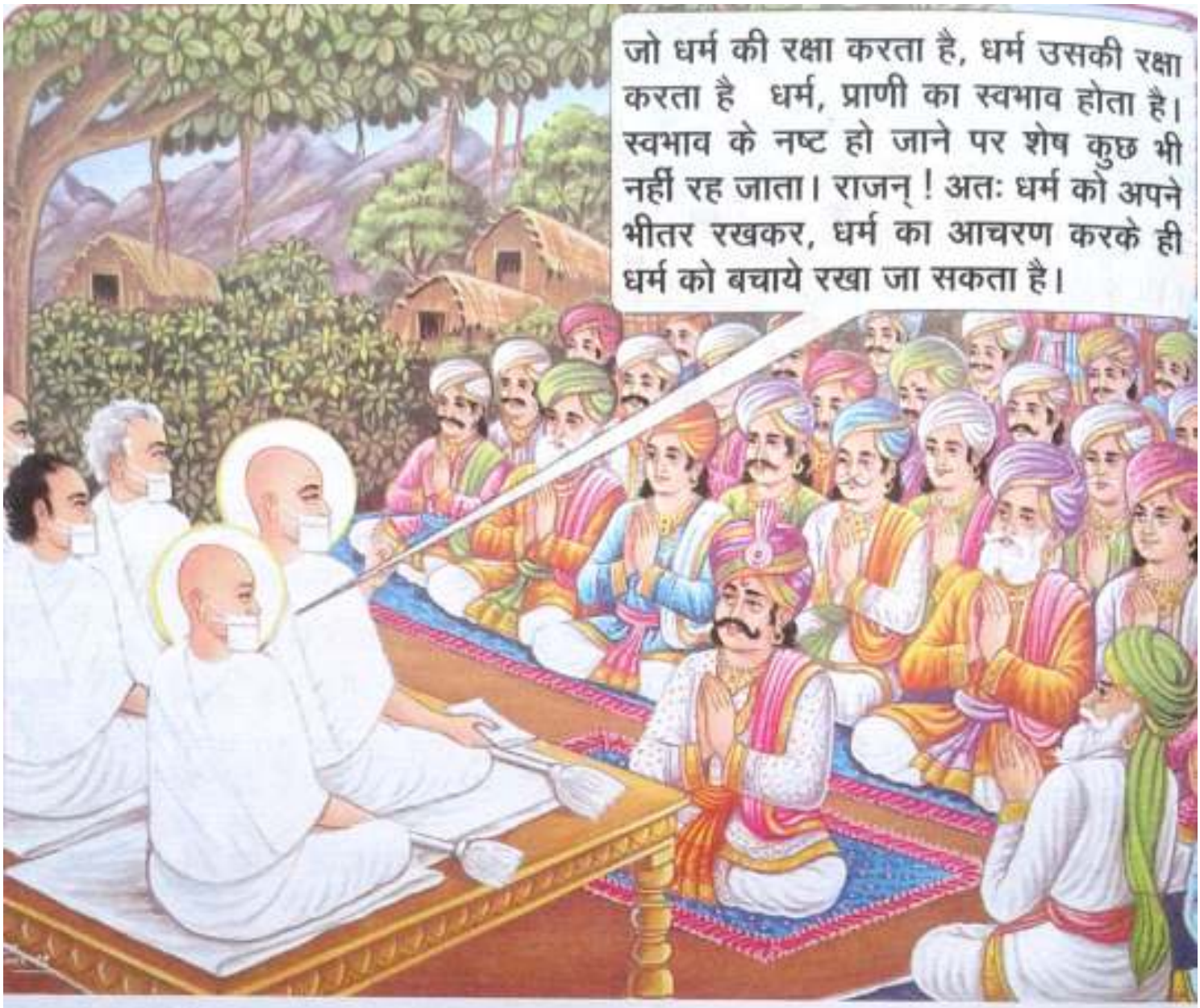

मुनिश्री जयमल जी म. सा. ने मधुर कंठ एवं अपनी विशिष्ट शैली में धर्म विवेचना आरम्भ की। अहिंसा को धर्म का मूल बताते हुए उन्होंने राजा और प्रजा के धर्म का भी सुन्दर विवेचन किया। अन्त में धर्म-पालना में शिथिलता न बरतने की प्रेरणा देते हुए मधुर स्वर में गान किया–

दुर्लभ मिनख जमारो पाय, परमादे दिन निकल्या जाय।
धर्म बिना जो गमावे काल, बूढ़ा पण तै कहिये बाल।। (जयवाणी)

महाराजा अभयसिंह ने प्रवचन पूर्ण होने पर खड़े होकर निवेदन किया कि आज सच्चे सन्त कम ही रह गये हैं। उनमें भी आचार्यश्री और उनके शिष्य जयमल जी म. सा.जैसे प्रभावशाली सन्त तो और भी कम है। इस काल में आप ईश्वर तुल्य हैं। नगर में अधिकाधिक विराजकर जन-जीवन को पावन करने की विनती के साथ वन्दना कर नरेश विदा हो गये। उनके मन में आचार्यश्री एवं मुनि जयमल जी महाराज के बार-बार दर्शन करते रहने एवं उनकी अमृतवाणी का श्रवण करने की लगन लग गयी थी।

Scanned by CamScanner

तपस्याओं–दीक्षाओं का मेला (जालोर)

वि.सं. १७६० का वर्ष–जालोर का चातुर्मास। मुनि श्री जयमल जी महाराज ने पूज्यश्री के निर्देशानुसार इस वर्षावास में अतिविस्तार से श्रावक धर्म पर प्रकाश डाला। यहाँ अनुकूल अवसर पाकर उन्होंने काव्य-रचना की अपनी प्रवृत्ति को भी पर्याप्ततः विकसित किया। नई-नई रचनाएँ की।

श्रावकाचार पर अत्यन्त प्रभावशाली और स्व-रचित काव्यमय प्रवचनों से श्रावकवर्ग को एक ओर से प्रेरणा सशक्त रूप में मिल रही थी, दूसरी ओर स्वयं मुनि श्री जयमल जी म. सा. आदि सन्तों द्वारा विभिन्न तपस्याएँ, व्रतादि किये जा रहे थे। मुनिश्री जयमल जी महाराज ने चार मास में चार अठाइयाँ कीं। सुपरिणामस्वरूप श्रावक-श्राविकाओं का भी तप का मेला-सा लग गया।

चातुर्मास पूर्व भी दो दीक्षाएँ हुई, जालोर में सात अन्य दीक्षाएँ हुईं। जालोर तो चातुर्मास में अपूर्व धर्मस्थल हो गया था। इस भव्यता के पीछे मुनि श्री जयमल जी म. सा. की प्रेरणा की प्रबल भूमिका रही।

जालोर में ही एक समाचार और आया।

महासती लाछांदे मेड़ता में महासती बालांजी के संरक्षण में आत्मोन्नति में संलग्न थीं। उन्होंने उग्र तप किये और वे कृशकाय हो गयीं। छः माह की अल्पावधि में ही वे तपमार्ग में इतनी अग्रगामी और उग्रगामी हो गयी थीं कि तपानुतप करती हुई वे आत्मोत्थान कर संलेखना-संथारे द्वारा पण्डित मरण को प्राप्त हो गयीं। सर्वत्र उनकी प्रशंसा की जाने लगी और सत्य धर्म के चहेते श्रावकों को तपलीन रहने की दिशा में प्रेरणा प्राप्त हुई।

बादशाह मोहम्मदशाह पर प्रभाव

जालोर चातुर्मास के बाद आचार्य श्री भूधर जी म. सा., मुनिश्री जयमल जी म. सा. आदि ठाणा ३ का विहार दिल्ली की तरफ हुआ।

मोहम्मदशाह 'रंगीले' का शासन काल था। राजपूताना से जोधपुर नरेश महाराजा अभयसिंह, जयपुर नरेश आदि सात राजाओं को कुछ दिनों के लिए किसी विशेष विचार-विमर्श के लिए बादशाह ने दिल्ली बुला रखा था। ये नरेशगण प्रतिदिन शाही दरबार में हाजिरी दिया करते थे।

एक दिन जब ये नरेश दरबार में कुछ विलम्ब से पहुँचे तो बादशाह ने इन्हें टोक दिया। महाराजा अभयसिंह ने अर्ज किया–"जहाँपनाह ! देरी के गुनाहगार तो हम लोग हैं, मगर एक जरूरी काम के कारण विलम्ब हो गया।"

बादशाह–"यहाँ दिल्ली में कौन-सा जरूरी काम हो सकता है ? ताज्जुब है।"

Scanned by CamScanner

जोधपुर नरेश–''हजूर बात दरअसल यह है कि जैनधर्म के कुछ पहुँचे हुये सन्त-महात्मा दिल्ली में ही आजकल मुकाम किये हुए हैं। कल शाम को हमें इसकी इत्तला हुई तो सोचा दरबार में हाजरी से पहले महात्माओं के दर्शन कर लेंगे।''

जयपुर नरेश–''जी हाँ, जहाँपनाह ! हम गये तो दर्शनों के लिए ही थे, मगर मुनि जी की वाणी में ऐसा जादू भरा था कि प्रवचन अधूरा नहीं छोड़ पाए। वक्त गुजरता चला गया कि कुछ पता भी नहीं चल पाया और हम यहाँ.....।''

बादशाह–''आप बजा फरमाते हैं, राजा साहब ! हमारे अब्बाजान के अब्बाजान को भी जैन महात्माओं के दीदार की खुशनसीबी कभी हासिल हुई थी। वे भी उन महात्माओं के इल्म (ज्ञान) और उनकी रूहानी ताकत (आत्मिक शक्ति) के कायल हो गये थे। हमारे दिल में इन महात्माओं के लिए बड़ी भारी इज्जत का जज्बा है। जब भी आप उनके पास जाएँ तो हमारा भी सलाम अर्ज करें। परन्तु आश्चर्य है कि ऐसे पहुँचे हुए महात्मा हमारे शहर में मुकीम हैं। मगर उन्होंने शाही फरमान जारी नहीं करवाया, न ही सवारी वगैरह की कोई जरूरत बतायी, ऐसा क्यों ?''

जोधपुर-नरेश–''हजूर ये महात्मा ऊँचे किस्म के त्यागी और तपस्वी हैं। कोई-भी सवारी काम में नहीं लेते। हजारों-कोसों का सफर पैदल ही तय करते हैं और लोगों को दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मुक्ति की राह दिखाते हैं।''

शहजादा इस सारी चर्चा को ध्यान से सुन रहा था। उसके मन में उत्साह जागा और उसने बादशाह से अगले दिन पूज्यश्री के प्रवचनों को सुनने की आज्ञा ले ली।

शहजादा कायल हुआ

प्रातः जोधपुर-नरेश महाराजा अभयसिंह अन्य राजाओं और शहजादे के संग दिल्ली के स्थानक पहुँचे। उन्होंने शहजादे को पूज्यश्री के दर्शन कराये और अन्य सन्तों से भी भेंट करायी। मुनि श्री जयमल जी महाराज के मुखमण्डल की दिव्य आभा से वह बहुत प्रभावित हुआ। उसका मस्तक स्वतः ही झुक गया। उसने मुनिश्री से पूछा–'इस भरी जवानी में आपने किस गम के सबब से बैराग ले लिया है ?''

शान्त भाव से मुनि श्री जयमल जी म. सा. ने उत्तर दिया–''किसी दुःख से घबराकर नहीं, बल्कि आत्मा के सच्चे सुख की खोज में हमने दीक्षा ली है।''

शहजादा–''हम तो सोचते थे कि महात्माओं के दरबार में जा रहे हैं तो वहाँ बड़ी शान होगी, रौनक होगी। यहाँ तो बेहद सादगी है। रौनक तो आपके चेहरे पर ही देखने को मिली है। हम निहाल हो गये, महाराज !''

मुनि श्री जयमल जी म. सा.–''यह साधना और तपस्या की रौनक है। जो भी चाहे सच्ची लगन के साथ धर्म-पालन और साधना से ऐसी रौनक हासिल कर सकता है।'' शहजादा–''हमने सुना है कि आप लोग दर-दर से भीख लेते हैं। ऐसे खाने से

Scanned by CamScanner

कैसे तसल्ली होती होगी। आप लोग मीलों पैदल चले जाते हैं। कैसे आप चल पाते होंगे। पैर तो लहुलुहान हो जाते होंगे ?''

मुनिश्री जयमल जी म. सा.—''यह साधुचर्या आत्म-रमणता की चर्या है। हमने स्वयं ने यह रास्ता चुना है तो इस पर चलने में कठिनाई कैसी ?''

जोधपुर नरेश महाराजा अभयसिंह जी ने कुछ विस्तार से जब साधुचर्या का स्वरूप समझाया तो शहजादा तो दाँतों तले ऊँगली दबाने लगा—''वाह ! गजब की त्याग-तपस्या है।''

पूज्यश्री ने जीवन की क्षणभंगुरता की चर्चा करते हुए जगत् की असारता का विवेचन किया। उन्होंने अपने प्रवचन में चार दुर्लभों का भी विवेचन किया और कहा कि मानव जीवन पाकर मनुष्य को मुक्ति का उपाय कर लेना चाहिये। सांसारिक विषयों में खोए रहकर तो इस अमूल्य अवसर को पाकर भी व्यर्थ कर देना ही है। पूज्यश्री ने अहिंसा को मानवता का मूल बताते हुए इसे जैनधर्म का आधार सिद्ध किया। पूज्यश्री के प्रवचन से प्रभावित शहजादे ने हाथ जोड़कर मस्तक झुका दिया—''महाराज ! जैसा हमने आपके बाबत सुना था, उससे ज्यादा ही आलिम हमने आपको पाया है। परन्तु आपकी तकरीर से हमारे जेहन में कुछ सवालात उठे हैं। बेअदबी न मानी जाए तो पेश करूँ ?''

''जरूर-जरूर ! आप अपनी शंकाएँ बेहिचक बताइये। मुनि श्री जयमल जी म. सा. उनका समाधान करेंगे।'' पूज्य श्री मुस्कुरा दिये।

मुनि श्री जयमल जी म. सा. की ओर उन्मुख होते हुए शाहजादे ने कहा—''महात्मा जी ! अहिंसा को इनसानियत का जरूरी जज्बा और मजहब की जान जैसा बताया गया है। असलियत यह है कि सभी मजहबों के मानने वाले माँस खाते हैं। मुसलमान तो खाते ही हैं, बहुतेरे हिन्दू और सिक्ख भी माँसाहारी हैं, माँस खाने में पाप नहीं समझते हैं। फिर पाप से कैसे बचें ? क्या वाकई यह पाप है ?''

मुनि श्री जयमल जी महाराज—''आपने वाकई तारीफ के काबिल सवाल किया है। दुनिया का कोई मजहब यह हिदायत नहीं देता कि दूसरे जीवों को मारो और अपना पेट भरो। ये तो कुछ लोग ही हैं, जो मजहबी नसीहतों को दरकिनार करके माँसाहारी हो गये हैं। माँस खाना या जीवों को मारना सभी मजहबों में बुरा और पाप ही माना गया है।

इस्लाम में भी हिंसा का तरजीह नहीं मिली है। खुदा को रहीम या दयालू कहा गया है, फिर वह हिंसा की तरफदारी कैसे कर सकता है। पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब ने कुरआन शरीफ में हिदायत की है—'ऐ खुदा के बन्दो ! तुम अपने पेट को पशु-पक्षियों की कब्रगाह न बनाओ।' जाहिरा तौर पर यह सच्चाई सामने आती कि दूसरे जीवों को मारकर खाने की मनाही की गयी है।

Scanned by CamScanner

सात तरह के माँस को खाने की मनाही की गयी है—खून वाला, फाँसी से मरने वाले का, मूर्ति पर चढ़ाया गया, हथियार से मारे गये का, गिरने वाले का माँस अखाद्य कहा गया है और दूसरों के द्वारा मारे गये का माँस भी वर्जित माना गया है। जाहिर है कि इस्लाम न तो किसी को मारना और न ही माँस खाने को जायज करार देता है।''

अन्य अनेक धर्मों का उल्लेख भी जयमुनि जी ने किया।

शहजादे को अचरज हुआ कि इस्लाम तक की इतनी गहरी जानकारी उन्हें थी और कितनी खूबसूरती के साथ और असरदार तरीके से उन्होंने अपनी बात समझाने के लिए उसका इस्तेमाल किया है।

शहजादे का हृदय परिवर्तन-सा हो गया। अभिभूत होकर उसने करबद्ध रूप में निवेदन किया—''आप तो बहुत बड़े सन्त हैं ! रूहानी इल्म के इदारे में आप जैसे आलिम गिने-चुने ही होंगे जो अपने भले के साथ-साथ हजारों-हजार नादान लोगों को सही रास्ते में डाल रहे हैं। हमीर तो यह सुबह एक तब्दीली लेकर आयी है। बराए मेहरबानी आप मुझे कसम दिला दें कि मैं किसी बेगुनाह जानवर को न मारूँ। किसी को दुःख न दूँ और सभी के साथ इन्साफ करता रहूँ।

मुनिश्री जयमल जी महाराज ने आचार्यश्री की आज्ञा से पच्चक्खाण दिलाया। अन्य राजाओं ने भी शपथें लीं। शहजादे ने झुक-झुककर सभी सन्तों को वन्दना की।

□□

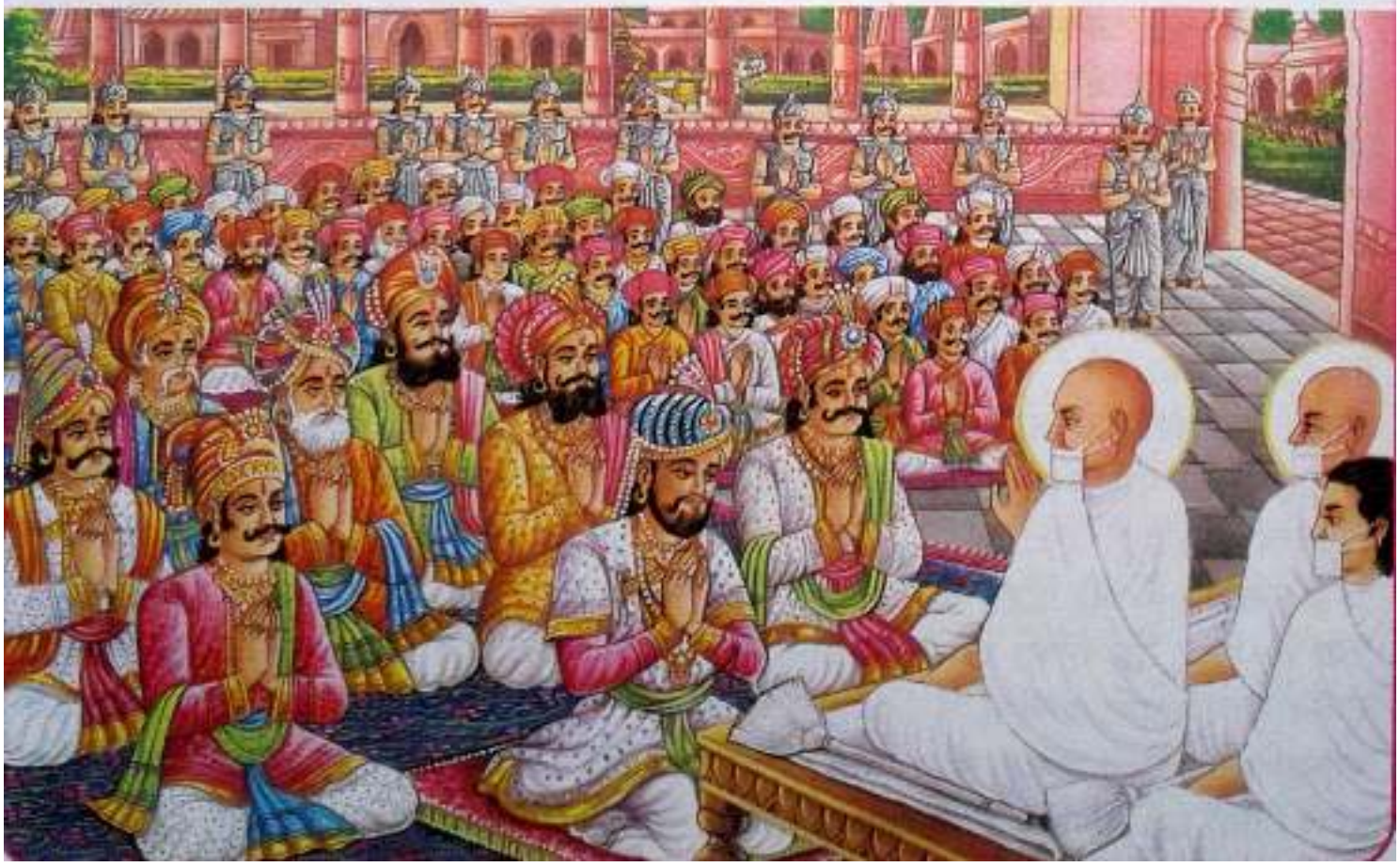

Scanned by CamScanner

卐 चमत्कारी जय जाप 卐

पूज्य जयमल जी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
अड़ियो काम तो होय जावे, वली बिगड़्यो काम भी बण जावे।।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
राज-काज में तेज रहे, वली खमा-खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
एक माला नित्त नेम रखो, किणी बात तणो नहिं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुःख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।

नोट—इस चमत्कारी जय जाप को नित्य पढ़ने से सम्यक्त्व सुदृढ़ बनता है।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन
C/o. मोती ज्वैलर्स
78, Millers Road,
Kilpauk, Chennai-10
Ph. : 26422308, 26422309

श्री जय ध्वज प्रकाशन समिति
(शाखा-कार्यालय)
श्रुताचार्य चौथ स्मृति भवन
39, विनोद नगर ब्यावर (राज.)

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय राष्ट्रीय शिविर ट्रस्ट
C/o, श्री चैनराज जी गोटावत
एम.सी. गोटावत इलेक्ट्री
वी. एस. लेन, चिकपेट
फोन : 26571898,

Scanned by CamScanner

स्वाध्याय-ध्यान प्रणेता, डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के प्रवचन एवं संपादित पुस्तकें

सचित्र बड़ी साधु वन्दना भाग-1-5

आचार्य श्री जयमल जी म. की अमर रचना बड़ी साधु वन्दना की एक-एक कड़ी पर विस्तृत विवेचन करने वाले प्रवचन।
(प्रवचनकार : डा. पदमचन्द्र जी म. सा.)
रंगीन चित्रों द्वारा प्रत्येक गाथा का सजीव चित्रण किया गया है।

प्रत्येक भाग पक्की बाइंडिंग युक्त 400 पृष्ठों का है। प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है
पाँचों भागों को एक साथ मंगाने पर मूल्य : 1250/-

जय ध्वज

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का सम्पूर्ण जीवन चरित्र रंगीन चित्रों सहित पाँच भागों में प्रकाशन की योजना दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा भाग प्रेस में है।
प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथाऐं

बड़ी साधु वन्दना में दिये गये ऐतिहासिक चरित्रों के जीवन पर रंगीन सचित्र कथायें। कुल 108 भाग प्रकाशन की योजना
प्रत्येक भाग का मूल्य : 25/- है।

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा.
का संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं स्वाध्याय हेतु नमोकार मंत्र, जयजाप,
पच्चीस बोल स्तोक संग्रह इत्यादि प्रकाशित साहित्य

निम्न पते पर अपना आर्डर भेजें।

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

78, MILLERS ROAD, KILPAUK, CHENNAI - 600 010.
CELL : 94441 43907, 9841047607

Scanned by CamScanner